तुलसीदास कृत रामायण का

इतिहास

जिसमें

रामायण सम्बन्धी दोहा चौपाइयों के प्रसङ्ग में वाल्मीक, नारद, कुम्भज,

परशुराम, दुर्वासा, ध्रुव, दक्ष, चित्रकेतु, कनककशिपु, शिवि, दधीचि,

गालव, नहुष, आदि राजाओं व ऋषीश्वरों का वृत्तान्त

वर्णित है

श्रीमन्महाराजाधिराज गुणि गण मण्डली मण्डन

श्री उदित नारायण सिंह जी वीरेश काशी नरेश की

आज्ञानुसार

कविकुल शिरोमणि श्री रघुनाथ दास कविने बनाया

महात्मा हरि भक्तों और अन्य विद्यानुरागियों के

उपकारार्थ

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छापागया

अक्टूबर सन् १८७८ ई०

अथ शंकावली

श्रीजानकी बल्लभो विजयते। ए गोसांई जी की रामायण बिचार तें सर्ब शंका रहित है जाते पूर्ब परत गए तें इसी ग्रंथ में समाधान बाहुल्य ते मिलत है परंतु इस ग्रंथ का प्रचार बहुत है यातें बहुत लोग शंका करत हैं तातें कछु लिखत हैं शंका भाषा वहू करव में सोई प्रतिज्ञा तें बिरुद्ध कांड के आदि संस्कृत कवि काहि लिखे· उत्तर। देव बानी अति मंगल रूप जानकै वा भाषा के खटूलक्षन में संस्कृत हू चाहिये १ सं· निज इष्ट देव त्यागि प्रथम गणेश बंदना किए उ· गणेश का प्रथम पूजन सर्ब सम्मत वा प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ २ सं· गोसांई जू अनन्य द्विभुज रघुबर उपासक नारायण जू को उर में बास १ काहे को उ· दोऊ का अभेद जानि प्रमाण प्रगट भये श्रीकंता ३ सं माया जीव ब्रह्म जगदीश ये सब अनादि हैं बिधि ने कैसे बनाये उ· उपजाने में तात्पर्य नहीं है गुण औगुण का प्रकरण है वा प्रार्थना तें बिधि ने उपजाये प्रमा· जय जय सुर नायक इत्यादि प्रार्थना और तुमहिं लागि धरि हौं नरबेषा ४ सं पूर्ब अनेक बंदना करि आये अब बंदौ प्रथम मही सुर चरणा यह कैसे बने उ· चारों वर्ण में प्रथम कही आदि ब्राह्मण ५ सं· बंदौ प्रथम भरत के चरण कैसे बने उ· तीनों भाइन में प्रथम भरत वा श्रीराम भक्तन में मुख्य ६ सं· नाम बंदना में चाप भंग में कहि दंड कवन पावन कहा यामें कांड क्रम भंग दोष होत है उ· बिवाहादि शेष वालकांड चरित्र चाप भंग अंतर गत है प्र० टूटत ही धनु भयो बिवाह इत्यादि औ समग्र अयोध्याकांड आधा आरण्य दंडक वन पावन में गतार्थ है प्र· मुनि गण मिलन बिशेषबन इत्यादि वा सप्तकांड में तात्पर्य नाहीं किंतु वाके प्रतापादि बर्णन में है ७ सं· गोसांई जी कहूं कबिन होउं कहत हैं कहीं कवि तुलसी यामें काहेतु उ कबिन होउं निज दीनता से कवि शंभु प्रसाद सुमति हिय हुलसी इत्यादि ८ सं· अघ तो प्रसिद्ध है बिन अघ तजी सती यह कैसे उ· इहां अघ शब्द दुःख बाचक है सती त्याग में शिव जू के कछु दुःख

वर्णन भयो दुःखी भयउं वियोग प्रभु तोरे यह भक्ति विरह में कहे पत्नी भाव तें नहीं ८ सं· प्रजा सहित रघुबंश मणि निज धाम गये यह प्रश्न के उत्तर न दिये सो क्या उ· उपासकन के नित्त अवध बिहार सम्मत है तातें बक्ता मौन रहे वा उत्तर में गुप्त उत्तर दियो। गये जहां शीतल अमराई बाग से फिर गृह आगमन लिखे १० सं· जो प्रभु मैं नहीं पूछो सोभी कहना सो शिव जू कहा कहे उ· औरों एक कहों निज चोरी इत्यादि ११ सं· सती मोह तो आरण्य कांड में भयो फूल बाटिका में गिरिजा नाम से पूजन कैसे करे उ· देवता अनादि हैं इन में सब नाम सदा प्रसिद्ध हैं प्र० गुरु अनादि जिय जानि १२ शं· निशि दिन नहिं अवलोकहिं कोका उभय घरी में रात दिन कैसे बने उ· कोक निशही में भोग करने लगे दिन नाहीं देखत यह अचरज वाको पुर्ष का दुखी यह निज पत्नी संबंध के मर्यादा न रही १३ शं· काम की चढ़ाई तो संकर के विजय हेत है विश्व विजय गाये सोकाहेतु उ· विश्व विजयी काम के संहार से शंकर के अति बड़ाई में तात्पर्य है १४ शं· मनुसतरूपा के बरदान समय में युगल प्रगटे बरदान राघव दियो किसोरी जी न बोली सो क्या हेतु उ· दोनों का अभेद है प्र· देखत भिन्नन भिन्न १५ शं· भानुप्रताप धर्मात्मा ज्ञानी सो श्राप तें राक्षस भयो यामें क्या हेत। जीव के प्रारब्ध कर्म मुख्य हैं प्र· तुलसीजस भव तव्यता इत्यादि १६ शं· रावण के बरदान में बानर मनुज दुई और मरो एक मनुज राघव हाथ से दूसर बर का क्या हेत उ· रावण बध में राम जू प्र· आपन बध मानव कर बांची हंस्यो राक्षस बध में ये दोऊ भिन्न भिन्न कारण हैं १७ शं· जन्म एक दुइ ए तीन कल्प की कथा पहिले शिव जू कहे चतुर्थ कल्प के प्रसंग में मन प्रकरण तें आकाश बानी तें कहे कश्यप अदिति महातप कीन्हा पुनः नारद बचन सत्य सब करिहौं यह पूर्ब कल्प के कथा इहां कहां ते आई उ· भेद से इहां। व्यवस्था प्र· कल्प भेद हरि चरित सुहाये। भांति अनेक मुनीसन गाये इत्यादि १८ शं· श्रीरामादि चारों भाइन्ह के नाम करण में क्रम भंग है उ· इहां पाठ क्रम तें अर्थ क्रम बली है वा राम तापनी मांडूकोपनिषद में क्रम विपर्य यहै बा लक्षमण के बिशेष गुण कहिने थे यातें भरत के लिखे नहीं सत्रघुन की आड़ से लिखे १९ शं· माता को पै ले अलौकिक विवेक दिए रहे अब सो भूलीए विश्वरूप दिखाये या में क्या हेतु उ· वात्सल्य की अधिकता से माता भूली प्रभु विश्वरूप दिखाइ कै पूर्व विवेक दृढ़ कराइन्ह २० शं· बिश्वामित्र पहिले ही जानते रहे तब ऋषि निज नाथ चीन्हे यह कैसे बने उ· राह में ऋषि

बाल बिनोद देखि भूले ताड़का बध से पुनः ईश्वर जाने प्र. गीतावली प्रगट च रित सुहाये इत्यादि २१ सं ऋषि दोऊ भाइन्ह को यज्ञ रक्षा हेतु ल्याये राजाज्ञा बिना मिथिला को क्यों ले गये उ. अब मुनि ही पिता हैं प्र. राजा बचन तुम मुनि पिता आन नहि कोई २२ शं. मिथलेश जू प्रथमहीं बिश्वामित्र से राम प्रताप जाने रहे तब सभा में अनादर बचन सब के साथ क्यों कहे उ. राम रूप मोहनी तें जनक जू राघव का ऐश्वर्य भूले यहां वात्सल्य रस प्रधान है २३ शं. सीय स्वयंबर देखिय जाई यह नाहीं बनत जाते सिया जू स्वतंत्र बर नाहीं बरा उ. स्वयंबर दुइ बिध है प्रन स्वयंबर द्रोपदी आदिका स्वतः स्वयं बर द्रोपदी दमयंती आदि २४ शं. जनक बाम दिशि सोह सुनैना और स्मृति में अरु लोक में दक्षिण दिशि चाह्यतु है सो क्या हेतु उ. बाम कही शिव शिव कही कल्याण दिशि अर्थ ते कल्याण दिशि आवत है वा जनक की बाम पत्नी सुनैना सोह दिशि दक्षिण दिशि अथवा जनक है बाम दिशा जेहि के ऐसी सुनैना २५ शं. जब ते राम ब्याहि घर आये तब तें अयोध्या में सब आनंद बसे तो आगे क्या आनंद नहीं है उ. अल्हादनी शक्ति सीता जू तेहि तें आनंद पूर्ण भयो यह भाव है २६

इति संक्षेप ते बालकांड शंकावली

अयोध्याकांड शंकाबली शं. पूर्व बाल कांड में ही श्रीगुरु पद रज ते बिवेक नेत्र बिमल करे पुन इहां निज मन मुकुर सुधार काहे लिखे उ. भरत महिमा वर्णन अति अगम जानि पुनः मन निर्मल कीन्ह० प्र० भरत परम महिमा सुनि रानी जानहिं राम न सकहिं बखानी। अयोध्या कांड में मुख्य भरत चरित्र प्र. भरत चरित करि नेम इत्यादि वा महाराज दशरथ आदि सबका मनोरथ भंग इस कांड में बिचार रजते सो कुमल दूर कीन्ह २७ शं. दशरथ जू राम जू को बिश्वामित्र साथ भेजे तब तनु त्याग न करे बनयात्रा में कीन्ह सो क्या हेतु उ. बिश्वामित्र के साथ गये तहां बशिष्ठ जू बचन ते संदेह नाश और मुनि सहायक और ऋषि तनु के नृप निज प्राण धारण करि रहे प्र. तुम मुनि पिता आन नहिं कोऊ पुनः सुत उर लाइ मृतक जनु भेंटे बन में सब बिपरीत तेहि तें तनु त्याग २८ शं. श्रीजानकी जू बन यात्रा समय में सेवा करै को कहा और ग्रंथकार सेवा न लिखे सो क्या हेतु पिता बचन में तात्पर्य प्राणपति के साथ जाने को है वा प्रत्यक्ष सेवा भी लिखे बट छाया बेदका सुहाई इत्यादि २९ शं. राम जू के कैकेई बरदान तो तापस बेष बिशेष उदा

सी हैं तो धनुषबाण धारयो रथ चढ़िवो मृगया आदि कैसे बनेउ· कैकेई का वरदान व्याज भरि है अवतारि धरि स्वतंत्र लीला करिवो मुख्य राम जनम जग मंगल हेतू वा मुनि व्रत औ स्वधर्म दूनो निवाहे ३ शं· प्रयागवासी भरत की बड़ाई करत हैं राम गुण ग्राम सुनि वो कैसे उ· निज बड़ाई सुन मुख्य उपासक स्वामी के गुण सम्मुख हैं वा बेनी के फूल में हरि कथा से राम गुण ग्राम सुनत चले ३१ शं· भरद्वाज के शिष्य पचासक आये और सब राम प्रेमी मुनि चारेक बटु संग दिये में का हेतु उ· सीता रामादि चारि बटु भी वा चार सब ते अधिक सुकृती चार वा चार बेद यथारथमारग ज्ञाता ३२ शं· श्रीराघव का शिव पूजन अयोध्या औ लंका में लिये और में नाहीं सो क्या हेतु उ· श्रीराघव जू के कुल देव रंग जू हैं और संकट में आराध्य शंकर जू या मे अनेक प्रमाण एही प्रथम में बाल उत्तर में संकट है नहीं आरण्यादि में सीता विरह सो राम जू बिकल ३३ शं· श्रीराघव के बन यात्रा में पग में शूल का न लगाये भरत के कहे सो क्या हेतु उ· राम गवन पर्यंत है औ बसंत ऋतु भरत के यात्रा ग्रीषम में और बिरह संताप तें ३४ शं· भरद्वाज भरत के पहुनाई में ऐश्वर्य दिखाये सो क्या हेतु उ· भरत के बैराग्य की परीक्षा अर्थ यथा रथ भई प्र· मुनि आयसु खेलबार ३५ शं· भरद्वाज से भरत की भेट गाये महा मुनि बालमीक सो नाहीं सो क्या हेतु उ· भरत जी बिरही हैं राम दरशन में अति त्वरा है भरद्वाज पहुनाई वत कदाचित बिघ्न करे तातें कवि भेट न गाये ३६ निषाद राज तो यमुना तीरही सें फिरा भरत यात्रा में देखावत हैं कि ये पय सरित समीप रघुबर परण कुटी है तो ए कहां तें जान्यो उ· निषाद फिरो तो बीचही ते ये बर्ष भर के भीतर कैक बार गयो वा सेवकन द्वारा प्रति दिन की खबर लगाये रह्यो राम जू के भरतागमन को पै ले बिचार पुनः निश्चय है खल्लन के बल हृदय खभारे लखे या में क्या हेत उ· लक्ष्मण राम प्रेमांध हैं राघव का कलेश नाहीं सह सकत प्र· मातु पिता नाहिं जानउं काहू ३७ ॥ इति अयोध्याकांड शंकावली ॥ अथ आरण्य शंका लक्ष्मण जू प्रथम निषाद को ज्ञान बैराग्य भक्ति उपदेश कीन्ह फिर राम जू से फिर षट प्रश्न किये को क्या हेतु उ· सब बात के ज्ञाताभी बड़ेन को प्रश्न करते हैं वा आगे रघुपति ललित नर लीला करेंगे सब बात पूछ राखें तातें मोह न होय ३८ शं· सूर्पनखा तो परम सुंदरी बन के गई लक्ष्मण जू रिपु

भगनी केरो जानी उ॰ अगस्त के बचन से वा सूपनखा के बचन ते तीन लोक में खोजेउं नाहीं मिला ताते अब लगि कुआरी रही इत्यादि बचन ४० राम जू सूपनखा ते लक्षमण को कुंवारे कहे ए तो बिवाहे हैं उ॰ हास्य रस और बिवाह राजनीति आदि में कूट का दोष नहीं कुमार अवस्था ४२ शं॰ काम लोभादि कोई रीति सों जीव सन्मुख जाय ईश्वर त्याग नहीं करत तो सूपनखा केसे कर त्यागी बिरूप करि उ॰ सीता बिरोधनी अति दुष्टा शत्रु भगनी रही४२ शं॰ मारीच तो कपट मृग रहा ताको चर्म राम जू केसे ल्याये उ॰ प्रभु सत्य संकल्प हैं ताते मृगै तन रहा प्र॰ रामकीन्ह चाहैं सो होई ४३ शं मृगछाला लाये कि नाहीं यह कुछ कवि न लिखे सो क्या हेतु उ॰ जेहि प्रिया के अर्थ चर्म ल्याये सो चोरी गई ताते कवि चर्म ग्रंथ में प्रगट न कहे अवलं रपाद के कहे प्र॰ तापस रुचिर सुदल मृगछाला ४४ शं॰ रावण तो मन में अनुमान कीन्ह गीधराज सुनत धायो यह केसे बने उ॰ सुनत पद में रावण कछु कटु बचन कहे यह जानब। ४५ शं॰ राम जू गीधराज से कहे कि सीताहरण पिता सों न कहिना जो मैं राम तो कुल सहित रावण कहै गो यामें क्या हेतु उ॰ सीता हरण सों पिता के स्वर्गों में अति दुःख होइ गो रावण तो मरे पर कहै गो ताते सीता प्राप्ति शत्रु बध आदि से अति सुख होइगो ४६ श सेवरी को राम जू न बधा भक्ति कहे सो भागवत आदि ग्रंथ से विरुद्ध है उ॰ यह ग्रंथ नाना पुराण गम निगम है ॥ ४७ ॥ इति आरण्यशं॰

अथ किष्किंधा शंका॥ हनूमान बिप्र रूप धरि क्षत्री को राम को माथ नायो सो क्या हेतु उ॰ राम तेज न सहि सके वा नेत्र मुख द्वारा कपट लखि परै गो ताते माथ नीचे कीन्ह ४ शं॰ लक्ष्मण ते दूना प्रिय हनूमान को काहे कहे उ॰ लोक रीति सों कि हमारे भाणहू ते तुम अधिक हो वा कपि केवल दुख में सहायक है लषण सुख दुख में वा लषण राम के सेवक हैं ए दोनों के सेवक वा लषण द्वारा प्रिया बियोग इन द्वारा प्राप्ति शं॰ महाबीर ने ए प्रभु केसे पहिचाने उ॰ दशरथ के जाये इत्यादि बचन ते ये बड़े पंडित हैं ५ शं॰ राघव अरु सुग्रीव अनेक देव छाड़ के पावक साखी क्यों दिये उ॰ मित्रता बचन द्वारा वा गिंद्रिय को देवता अग्नि वा शुद्धता औ सपथ अरु साक्षी यों अग्नि मुख्य प्र॰ तो कृशानु सब के गति जाना। ५। शं॰ राघव एक रूप दोऊ भाइन्ह के कहे निज में भ्रम

ओ माला मेली ए सब में क्या हेतु उ· नरनाट्य में सब बनत है ५२ शं· रा
म जू प्रथम बाली बध के एक बाण से प्रतिज्ञा कीन्ह फिर दूसर बाण चढ़ाये
सो क्या हेतु उ· बानर राज बाली तेहि के सहायक निवार्णार्थ बाण की अ
मोघता राम संकल्प के अधीन ५३ शं· राम जू सर तान के बाल के हृदय मर्म
स्थान में मार्यो जलदी न मर्यो सो क्या हेतु उ· राम रूप दर्शन संभाषण अं
गद सों पवन आदि हेतु राम इच्छा ५४ शं· जेहि शायक तें मैं बाली मार
तेहि बाण तें मैं काहू मूढ़ को हतौं या में सत्य प्रतिज्ञा और शरणागत
पालत्व कैसे बने उ· वोही दिन सुग्रीव आय आय मिले ५५ शं· और
दिशा में छोटे बानर सात समुद्र पार गये दक्षिण में सब सुभट तहां निज
निज बल कहे अंगद आइ वे में संशय कहा सो क्या हेतु उ· अति बली रा
वण को भय वा राम मुद्रिका देन आदि हनूमान को जानत हैं इति किष्किंधा
शंकावली ॥ अथ सुंदर शंका ॥ महाबीर अशोक बाटिका में सीता रह
व संपाती से सुना रहा महल में खोजे काहे गये उ· अशोक बाटिका इन्ह
की नहीं जानी यातें बिभीषण कहैं गे ५७ महाबीर के लंका जात पुर्ष बा
धक न मिले तीन स्त्री ए मिली सो क्या हेतु उ· भव सागर के पार जात मु मु
क्षू के तीनो लोक के स्त्री बाधक स्वर्ग की सुरसा पाताल की बासनी सिंहि
का मृत्यु लोक के लंकिनी ५८ गयो दशानन मंदिर माहीं इहू भ्राता के एक
एक शिर याके दश क्यों भये उ· ब्रह्म बिचार कीन्ह विद्या १४ हमारे अरु
चार दश विद्या के अर्थ दशानन कीन्ह यह भाव मुरारी नाटक में वा परमार्थ
रामायण में रावण मोह रूप है दश इंद्रिय आनन है ५९ शं· राम लक्ष्म
ण तो राक्षसी माया तें बन गये और माया ते अस रचि नहिं जाइ यह कैसे
उ· सुंदरी में राम नाम है नाम दूनो ब्रह्म ते बड़ा है ६० शं· सुग्रीव को बालि बध
करि राज दीन्ह और बिभीषण को रावण जीवत तिलक सारे यामें क्या हेतु उ·
सीता जी के धैर्य अर्थ वा जीवत शव सम चौदह प्राणी वा निशाचर हीन करौं
महीं या प्रतिज्ञा तें ६१ शं· समुद्र राम दूत के तौ मैंनाक द्वारा सेवा कीन्ह और राम
के तीन दिन बीते न आयो न सेवा या में क्या हेतु उ· दूत का पराक्रम देखा और राम
के नरनाट्य बचन तें भ्रम भयो वा साठ हजार उत्तर तट वासी आभीरों के बध में
तात्पर्य है। ६२। इति सुंदर कांड शंकावली। अथ लंका कांड शंका। समुद्र
के यह पार शंभु थापना में क्या हेतु उत्तर सर्व तीर्थ में समुद्र श्री अष्ट बैकुंठ

अंतर्गत द्रविड़ देश जान के वा रावण शंभु भक्त है शंभु के एहि पार राख जाते उ
स्का पक्ष करैं ६३ शं· पहले सेतु के हेतु तीन कहे जलधि१ नलनील २ राघव ३ से
तु बांधे पर श्रीरघुबीर प्रताप तें पाषाण तरे सो क्या हेतु उ· और उपाय साधारण
मुख्य हेतु सर्व शक्ति युत ईश्वर वा मारत लरत सुभट विजय मालिक राजा ६४
शं· सेतु बांध के फेर तीन मार्ग कहे सो क्या हेतु उ· भव सागर पार के तीन मार्ग
कर्म ज्ञान उपासना ३ जलचर कर्म मार्ग आकाश निरालंब ज्ञा· सेतु सम उपासना
शं· सुबेल पर राम जू के सयन औ सिथलता कहे और रावण के नृत्यादि औ राज
श्री सो क्या हेतु उ· राघव बिरही वह राज श्रीयुत वा राम जू देवी संपति युत शांत
आसुरी संपति वालो वह चंचल वा राम के रावण कुछ माल नहीं जग मह सखा नि
सा वा छिपाइ के श्रीराम कहे सो चंद्र बर्णन औ छत्र भंग से अस्पष्ट ६६ शं·
फिरैं राम सीता में हारी सीता हार ने वारेण कौन उ· राम निंदा सुनि रोष तें साहस
वा राम प्रताप समुझ के ६७ शं· लक्ष्मण के प्रथम शक्ति लगी तब बड़ो दुख बढ़ो
उपाय दूसरी शक्ति में कछु नाही या में हेतु उ· प्रथम में नरनाट्य दूसरे में ईश्वर
वा बालपन की भूमि औ दीनता यथा संख्य ६८ शं· महाबीर राम कार्य के अर्थ
औषधी लेने चले तहां अनेक दुःख पाये मरते बचे सो क्या हेतु उ· स्वामी के आगे
बल भाषि अभिमान तें चले ६९ शं· माया सर में मकरी कहां रही उ· सर तो
पूर्ब को रह्यो रचना बिशेष माया तें एही हेतु मूल में बर पद दीन्ह प्र· सर मंदर
बर बाग बनावा ७० शं· राघव लषण को सहोदर कहे पुनः निज जननी के एक
कुमार कहे यह कैसे बने उ· सहोदर प्रताप तें प्र· प्रभु प्रलाप सुनि कान वाचरु
तें वा पिता संबंध तें वा कौशिल्या उदर में लषण भी प्रथम रहे बल देवकी नाईं
प्र· शेष उपनिषद एक कुमार एक पद से मुख्य ७१ शं· बिभीषण राम शरण
भये पर कुंभकरण के पांय जाइ परे सो क्या हेतु उ· भेद करि मिलावे सो अर्थ
वा निज वृत्तांत कहि श्रद्धता अर्थ ७२ शं· अंगद हनूमान सुभट शिरोमणि सो
मेघनाद के कोप के मारे वा को धावन औ मरे न तब फिर चले औ कुंभकर
ण रावण१ मुष्टिका से भूमि में गिरे या में क्या हेतु उत्तर एक ओर को बिजय कहे
तो रण शोभा नहीं होय वा मेघनाद के उत्कर्ष तें लषण क उत्कर्ष में तात्पर्य ७३
शं· रावण कुंभकरण के बाण द्वारा लंका में पठायो औ मेघनाद के हनूमान
लंका द्वार पर धर आये सो क्या हेतु उ· लषण के मेघनाद सम शत कोटि योधा
न उठाए और मेघनाद को एके दास हनूमान उठाय लंका द्वार पर धरे यह

उत्कर्ष ७४ श· बिज्ञानी बिभीषण समर में बिकल होइ कै रथ की इच्छा क
री सो क्या हेतु उ· नर नाट्य देख भूले रहे राम जू परमारथ उपदेश तें पुनः
सावधान कीन्ह जैसे अर्जुन प्रति गीता ७५ श· शिव जू आरण्ये ते ८७ हजार
बर्ष समाध में रहे हम हूं उमा रण चरित्र देखे यह कैसे बने उ· ईश्वर अनेक रूप
तें समर्थ ७६ श· प्रतिज्ञा तो प्रति बिंब कै ताको जरिबो कहे तो पतिव्रत कैसे ब
ने उ· सत्य सीता के प्रगटे में तात्पर्य प्रति बिंब को बिंब में लय ७७ श· बिभीषण
पुष्पक कुबेर को न दियो राघव को दियो सो क्या उ· बर्ष १४ में थोरिक दिन बाकी रहे भरत
देखवे की अति जलदी जानी पुनः राघव कुबेर को दिये॥ इति लंका शकाव·
अथ उत्तर शंकावली॥ पहले महावीर के बचन सुनि भरत बोले नहीं दूसरे
बचन में बोले सो क्या उ· दूसरे में बिशेष रिपु रण जीत सीता अनुज सहित
प्रभु आवत पहले में यह नाहीं ७८ श· जिन्ह कपिन्ह को निज देह गेह आदि
सों अधिक प्रिय कहे ते बिदा किये जे सामान्य प्रिय कहे ते राम जू समीप राखे
यह कैसे उ· नीति बिचार तें वा प्रीत मुख्य चाहिये दूर समीप ब्योहार गोण ८
श· दुई सुत सीता जाये पुनः दुइ दुइ सुत सब भ्रातन्ह करे और राम जी को
नाम न लीन्ह सो क्या उ· भरतादि के पुत्र अयोध्या में भये तेहि तें नाते पिता
नाम तें ख्यात सीता के पुत्र वाल्मीकि आश्रम में नैहर के पुत्र भये तें कन्या ना
म से फलानी के बेटा भयो है मुनि के सीता जू में कन्या भाव गीतावली में प्र
सिद्द ८१ श· अंगद अनेक भांति दीनता भाषे कृपाल राघव पास में न राखे
सो क्या उ· राज गादी कुल की परंपरा भ्रष्ट न होवे ८२ श· शंकर जू भुशुंडी
से कथा प्रत्यक्ष रूप तें न सुने मराल तनु से सुने सो क्या हेतु उ· सब श्रोता मरा
ल देखे वा गुप्त रूप तें कथा स्वाद अधिक वा शंकर भुशुंडी आचार्य हैं प्रगट
में संकोच वा सत असत का निर्णय मराल सों ८३ श· गरुड़ जू भुशुंडी प्रति
कहे महा प्रलय में भी तुमारे नास नाहीं सो कैसे उ· लोमस बरदान तें प्र·
काम रूप इच्छा मरण इत्यादि कबहूं काल न व्यापिहि नाही यह श्रीराघव ब
रदान वा उपासना मत में भगवत भागवतादि सब नित्य ८४ श· राम उदर में
भुशुंडी के अनेक कल्प बीते वाहर दुइ घरी सो क्या उ· राम प्रेरित यामे सब
बनत है ८५ श· भुशुंडी के मोह से भरतादि अनेक रूप देखे राघव एक
रूप हैं तो भ्रातादि नित्य कैसे बनैंगे उ· कौतुक के भरतादि में नित्य बिचार नाहीं
८६ श· लोमस के प्रकरण में बिना अज्ञान द्वैत होते नाहीं और शिव जू

भुसुंडी को प्रमाण हैतही कहे सो क्या उ. भक्ति रहित ज्ञान को अनादर भ
क्ति सहित को आदर दूनो पक्ष में यथा संख्य प्र० निज प्रभु मय देखेयज
गत इत्यादि ८७ शं. ज्ञान सिद्ध भये पर ग्रंथि खोलब लिखे बाकी कौन ग्रंथि
रही उ. अभ्यास की दृढ़ निवृति में तात्पर्य ८८ प्र. औरो एक गुप्त मत इत्या
दि ८९ शं. पाछे कौन गुप्त मत कहे जाते यहां औरो गुप्त मत कहत हैं सो
रहाय जोरे में का भाव अरु शंकर भक्ति साधन और राम भक्ति साध्य के
क बार ग्रंथिकार लिख आये पुनः इहां काहे लिखे उ. अद्वैत मत में ज्ञान
बिना मोक्ष नाहीं यह सिद्धांत वाको गौण करि भक्ति से मोक्ष और भक्ति
के आधीन ज्ञान विज्ञान यह गुप्त मत पाछे कहे बैठे गुरु मुनि अरु द्विज सज्जन
या प्रमाण से सभा में मुख्य गुरु तेहि तें कर जोरे वा रामजू की शील हेतु वा धर्म
के अंगी करने को तात्पर्य ग्रंथकार वर्तमान समय में परस्पर शैव वैष्णवन का
महा विरोध बिचार के परम धाम यात्रा के अंत सभा में श्रीराम बचन द्वारा
शंकर भक्ति मुख्य साधन औ श्री राम भक्ति साध्य फल यह सिद्धांत किये या
को कोई विरले जानत हैं ताते गुप्त कहे या रीति से कछु संदेह नहीं है प्र०
बहुत जन्म के सुधि मोहि आई इत्यादि ९० शं. का जन्मांतर स्मृति रहती है
पुराणन में तो इतिहास लिखा है परंतु इतिहासन में तात्पर्य है कि जो जल
जल में मिले वा थल का ओही फिर आवेगा एही ते जीवन में अनेक
वाद हैं। काल भी एक है परंतु केतना बिस्तृत हीन है सो चारों युगन के व्य
वस्था में ख्यात क्या चारों युगन में धर्म ये ही चले हैं कुंडलिया ॥ प्रथम का
ल एकै रह्यो बहु बिधि किमि ह्वै जाइ युग सूक्ष्म स्थूल सुन सुत एकै दर-
साय आय गत अंक न देखो एकै नव गनि जाय दशा फिर शून्य परे खो
डालयंत्र इति बेद युग कालहि अंतर खोल पितामह एक में कवहु जुग मन्व
न्तर १ श्री स्वामीजी कपट कही प्रभु चार युगन के सतयुग ब्रह्मा चहुं मुख
चारों बेद रहे त्रेता द्वापर बिष्णु जीव आनंद लहे १ रुद्र आय कलि ह्वै के
चौदह भुवन रहे जीव लहा बिश्राम जहां असभाव अहैं २ मुख ते बिनु
साधन जे निर्मल ज्ञान चहैं सो कलि के दोषन को नित मन लाइ गहैं गुण
मैं कलि को रूप लोक बिपरीति कहै देव दया बिन कैसे केउ गुणहि गहैं सब
कलियुग आवा घट घट पातक छावा कलि को प्रथम चरण जिन जानों द्वा-
पर अघ को है चरण बखानो प्रथमादि को तिसरो कर मानों चौथो

बजावा कूट परदह अकर्म अदायो पाप चरण को चौखल खाया चरण धर्म को एक बचाया सोई बीज बनावा २ ज्ञान योग जिव लेइ पराने धरम करम के रूप हे राने कलि के उर साधन थहराने नामें पार लगावा २ नाम प्रताप स दोन जागा जाके डर कलि को तम भागा बाढ़त देव चर्ण अनुरागा जासो यज्ञ श्रुति गावा ४ बहुत जन्म इत्यादि लिख आये जीव के जन्म नाहीं होत और चारि अवस्था में जन्म रूप भेद पाया जात है जैसे बाल वृद्ध इत्यादि कोई सिर्फ लड़का देखे होइ फिर दूसरी अवस्था में जो देखे गा सो नहीं पहचाने गा और जन्म संसार का नाम है और चारों युग का जो भेद कहते हैं सो प्रमाण तो समान जानव याही ते धरमन में विरुद्ध भासत है जैसे समान औ विशेष सो सब मतन में सामान्य विशिष्ट पायो जात है औ विशिष्ट में अनेक विरुद्ध देखो परै है जैसे मांस भक्षन में विंध्य के दाक्षिण वासीन को आज्ञा उत्तर वासी पतित होत हैं हनन धातु सो जीव में चरितार्थ नहीं होत जैसे घट मठ आकाश को नाश पावत है याही ते जीव व्यापक जानो जात है और जन्म सूक्ष्मस्थूल शरीर कर के भासतु है जैसे ८४ लक्ष योनि जन्म परमित कियो सो संस्कार और काल को धर्मन को मुख्य जान दो साम आयो दो॰ मन युक्त मानस सुखद शंका रहित उदार बोध रहत निज मोह बस शंका करत उदार १ मानस मन अनेक युत मानी मन गम नाहिं । मम मानस शंकावली क्षमव साधु महि माहिं ॥ २ ॥

इति सप्त कांड शंकावली संक्षेपः ॥
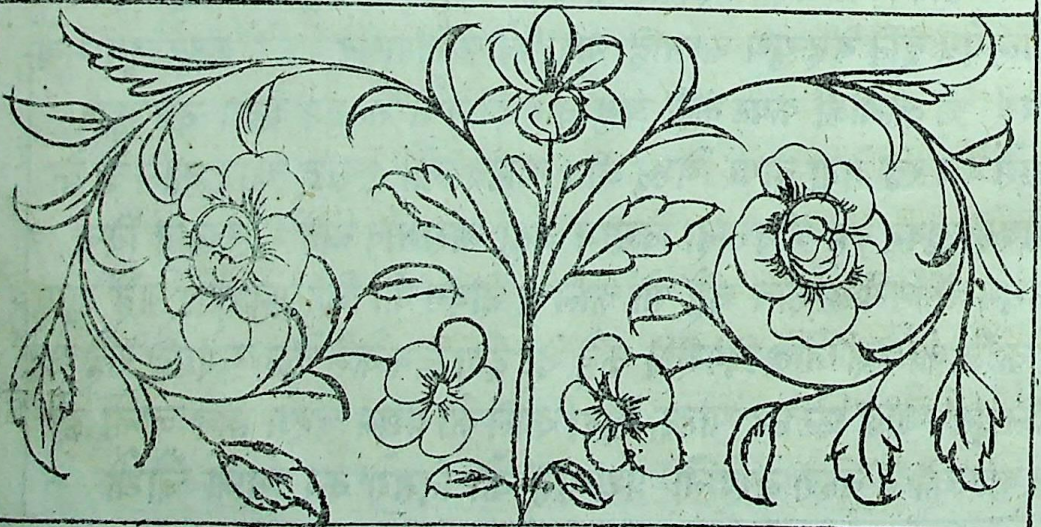
श्री गणेशाय नमः ॥ अथ बिश्राम अंग प्रारम्भः ॥

बिश्राम नाम धर्यौ ताको हेतु दोहा बिषै आप आकाश महं मन मटका जिमि संग। यहि भूउत्तर बिचार मग प्रेरक कर थिर अंग १ अथ रामायण के परमार्थ पक्ष को बिचार। दो॰। रामायण द्रुम मोक्ष फल गायत्री गउ बीच रामसुरक्षा अंकुरित बेद मूल शुभ बीज २ बेद बेद्य परपुरुष भो दशरथ तन यह धार बालमीक ते बेद भो रामायण अवतार ३ कुंभज मुनि निज संहिता माहीं कह्यो अनूप रामायण अरु बेद को भिन्न न जानो रूप ४ भक्तमाल बर ग्रंथ मे कीन्हो यह निरधार बाल्मीक तुलसी भये कुटिल जीव निस्तार ५ बेद मूल हृद ते चली कथा भूमि के द्वार आनम स्नान तरंगिनी पान करत सुख सार ५ वार्ता याते गूढाशय वेद रूप यह रामायण कथा भाग ते सगुण लीला प्रति पादन करतु है। अरु अंतर आशय ते परमार्थ पक्ष ऐश्वर्य छिपाइ कै कहत है यथा मानुष देह ब्रह्मांड जानो प्रकृत मार्ग सोइ लंक दुर्ग सो मन रूप मया सुखे रच्यौ है नाना मनोरथ ता लंका में सुंदर मंदिर समूह जानो अविद्या समुद्र है सो राग द्वेष आदि मकर नक्र सर्पन ते पूरण भयंकर विनीर्ण अथाह अति दुस्तर है अनेक संकल्प विकल्पता में भंवर है बिषय आसा अंत कतरंग है मोह रावण है अहंकार वाको भाई कुंभकरण है काम मेघनाद है क्रोध देवांतक गर्व नरांतक लोभ महोदर दुष्ट मत्सर अति कायबीर है कपट अकंपन है द्वेष दुर्मुख बीर मद सूल पाणी दंभ महा पार्श्व अधर्म दूषण असत्य कुंभ है पाषंडनिकुंभ है असत्संग १ आलस्य २ बिक्षेप ३ आदि मोह राय के मंत्री जानो सत रज तम गुण सेनापति जानो अयश अनर्थ भ्रम संसयादि धूम्राक्ष यूपाक्ष शोणिताक्ष इत्यादि मुख्य बीर यथा योग्य जानो विद्या मद धन मद आदि अनेक मोह रावण के राक्षस सेना है ममता सूपनखा असत् वासना लोलपता ईर्षा हिंसा तृसा अश्रद्धा आदि अनेक मोह भूपति की रानी हैं भृष्टता धृष्टता चिंता कृपणता कामना अनेक बिषय आसा आदि अनंत राक्षसी जानो जीव बिभीषण है सो दुष्टन के समूह में चिंता ग्रसित बसतु है इहां विवेक राम जू बिचार लक्ष्मण ब्रह्म विद्या सीता जू ज्ञान दशरथ भक्ति कौशिल्या बिषय बन भंजन हार अरु प्रवृति लंका दहन में प्रवीण जो बैराग्य सो हनूमान जानो धर्म सुग्रीव १ सत्य अंगद २ सतिसंग जाम्बवान ३ शील नील ४ संतोष नल ५ धीरज केशरी ६ अभ्यास गंध मादन ७ जप तप संयम श्रवणादि दिध्यासनादि आदि को मोक्ष के सब सावधान कुमुद १ द्विविद २ मयंद ३ सरभ ४ गंज ५ गवाक्ष ६ गवय ७ ऋषभ ८ सुषेन ९ वेगदर्शी १०

आप वानर भालु बीर यथा योग्य जानो यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारना ६ ध्यान ७ समाधि ८ आदि देव वृंद जानो मोह लंकेश नें सब साभीत अरु दुखी ॥ इति संक्षेपः ॥ दो॰ चल्यो महा दल साज के नृप बिवेक इति बीर पहिर कवच श्रुति शास्त्र को अचल महा रण धीर १ सैन साज इत मोह नृप आयो रण भूधाय। अति विचित्र सब सुभट सुत मंत्री बंधु सहाय २ ठाढो भयो बिवेक नृप मनसा भूमि मझार बहुत सुभट जूझे जहां वही रुधिर की धार ३ वार्ता तब असत्संग मंत्री के मंत्र तें मोह नृप अहंकार को जगाय के रणभूमि मे पठायो सिंहनाद करत महा सेना लेइ चढ्यो तासमय महा कोलाहल भयो बैराग्य सत्य धर्म आदि सब बीरन को घायल करि बिवेक राय सों महा युद्ध करत भयो तब बिवेक राय आत्म चिंतन सर तें अहंकार को शिर काट गिरायो तब सेना में महा हाहाकार भयो दो॰ समाचार सुनि मोह नृप ह्वै गयो निपट उदास। शोक अगिनि उर में जरत दीरघ लेत उसास १ वार्ता उत तें मोह को सुत महाबली अति धूर्त मदन बीर महा सेना लेइ चढ्यो इत तें बिवेक राय की आज्ञा तें बिचार कुंवर बैराग्य सत शीलादि बीर सेना ले चढो परस्पर महायुद्ध भयो मोहन सोषन उच्चाटन आदि अनेक बाणन तें बिचार कुंवर को मार्‍यो ता पाछे असत्वासना बरछी उर में मार के बिचार को मूर्छित कियो दो॰ तब बैराग्य बिचार करि दीनो मतो अनूप अहो बंधु शोचत कहा सोधो शुद्ध स्वरूप १ जग मिथ्या रज्जु सर्प वत सत्य ब्रह्म निरधार शुद्धानंदन चित धरो हरो अनंग बिचार २ वार्ता तब बिचार बीर सावधान होइ के मदन को ललकार्‍यो दो॰ रे निलज्ज पापी कुटिल दुरबुद्धी धिक तोहि कहा बस्य ले बस करत लेत कृपण जन मोहि १ वार्ता या रीति तें परस्पर प्रचारत पुनः महायुद्ध भयो तब बिचार बीर ने मदन महा भट को मार गिरायो दो॰ समाचार सुन मोह नृप भयो सो निपट अधीर हृदय दाह अतिशय भयो बिलपत कंप शरीर १ गई आस मोहि राज्य की मरो पुत्र बर बीर कुलमंडन अति काम सो दूजो बीरन धीर २ वार्ता तब अधर्म अरु असत्संग आदि मंत्रिन्ह के मंत्र तें सजग ह्वै के मोह नृप बिवेक राय सों महा युद्ध करत भयो दो॰ उद्द युद्ध भो परस्पर सोदरणयो नहिं जात कबहूं दबत बिवेक नृप कबहूं मोह सकात १ राजा मोह बिवेक को युद्ध भयो बहु काल नृप बिवेक बल अधिक लहि भो मन मोह बिहाल २ श्रवण मनन मिथ्या सवर निज आयु

धले हाथ गुरु श्रुति बचन प्रमाण सर हने मोह के माथ ३ मरो देखि नृप मोह
को बहुतक कटक पराइ बहुत सुभट जूके तहां पाछे धर्यो न पाय ४ वार्ता मोह
नृपति को रण भूमि में मरो देखि ममता तृष्णा चिंता ईरषा आदि नारि अ-
नि शोक युत बिलपि करत भई इहां दोहा । सत्य शील बैराग्य लौं मुदित सक-
ल परिवार सुर नर मुनि जय जय कियो दाह्यो मोह अपार १ वार्ता जीव स्वरा-
ज्य पायो तब धर्म सत्य बैराग्यादि बीरन सहित अरु बिचार बंधु सहित बिवे-
क राय ब्रह्म विद्या लेइ के निज राज धानी में अकंटक राज्य करत भयो बिवे-
क चक्रवर्ती भूपति को जब ते प्रताप रवि उदय भयो तब ते काल कर्म गुण स्व-
भाव कृत दोष दुख काहू को न भयो तीनों लोक में प्रकाश भयो तम कहूं न र-
ह्यो अविद्या निसा नाश भई अघ उलूक छिप गये क्रोधादि कैरव सकुचे
मत्सर मानादि चोरन को अभाव भयो सुख संतोषादि कोक गये विगत शोक
भये प्रबोध चन्द्रोदय नाटक आदि सद ग्रंथन के संम्मत से यह परमारथ पक्ष
अति दृढ़ परम प्रमाणीक जानो और नाटक अनेक दोष गुण के प्रधानता क-
र के यथा बिवेक मोहादि करके नाम अनेकता नाम में शंका न चाही ॥
॥ इति प्रमाण श्री तुलसी कृत बिनय पत्रिका ॥ यथा देव देहि अवलंब
कर कमल कमला रमन दमन दुख समन संताप भारी सान रा केस ग्रासन
विधुं तुद दलन काम करि मत्त हरि दूषनारी १ देव बपुष ब्रह्मांड सु वृत्ति ल-
कापति हुमा रचित मन दनुज मय रूप धारी विविध कोसैघ अति रुचिर
मंदर निकर सत्व गुण प्रमुख त्रय कटक कारी २ देव कु नृप अभिमान
सागर भयंकर घोर विपुल अवगाह दुस्तर अपारं नक्र रागादि संकुल
मनोरथ सकल संग संकल्प वीची बिकारं ३ देव मोह दस मौलि तद भ्रा-
त अहंकार पाकारि जित काम बिश्राम हारी १४ देव द्वेष दुर्मुख दंभ पर
अकंपन पट दर्प मनु यादः मद सूल पानी अमित बल परम दुर्जय निशाचर
चमू सहित षट वर्ग जो यातु धानी ५ देव जीव भव दंघ्रि सेवक बिभीषण
बसत मध्य दुष्टाटवी ग्रसित चिंता नियम जम सकल सुर लोग लो केश
लंकेश वस नाथ अत्यंत भीता ६ देव दीन उद्धारण रघुबर्य करुणा भवन
समन संताप पापौघ हारी बिमल बिज्ञान विग्रह अनुग्रह रूप भूप बर बिबु-
ध नर्मद खरारी ७ देव विश्व बिख्यात विश्वेश विश्वायतन विश्व मर्याद
व्यालारि गामी ब्रह्म बर देव बागीश व्यापक विमल विपुल बलवान नि

र्वाण स्वामी २ देव सर्व मेवात्र त्वद्रूप भूपाल मणि व्यक्त मव्यक्त गत भेद बिष्णो भुवन भव दंस कामारि बंदित पद द्वंद्व मंदाकिनी जनक जिष्णो ३ देव प्रकृति मह तत्व शब्दाद गुण देवता व्योम मरु दग्नि अवलांबु उर्वी बु द्धि मन इंद्रिय प्राण चितात्मा काल परमाणु चिच्छक्ति गुर्वी ४ देव आ दि मध्यांत भगवंत त्वां सर्व गत मीश पश्यंति ते ब्रह्म वादी यथा पट तंतु घट मृत्तिका सर्प स्रग दारु करि कनक कट कां गदादी ५ देव गूढ़ गंभीर गर्व घ्न गूढ़ार्थ वित गुप्त गोतीत गुरु ग्यान ज्ञाताज्ञ यज्ञान प्रिय प्रचुर गरिमा गार घोर संसार पर पार दाता ६ देव सत्य संकल्प अति कल्प कल्पांत कृत कल्पना तीत अहि तल्प वासी बनज लोचन बनज नाभ बन दाम बपु बनचर ध्वज कोटि लावण्य राशी ७ देव सुकर दुष्कर दुराराध्य दुर्व्य सन हर दुर्ग दुर्द्धर्ष दुर्गार्ति ह र्ता बेद गर्भर्भ का दभ्र गुण सर्वाक पर गर्व निरबाय कर्ता ८ देव भक्त अ नुकूल भव मूल निर्मूल करि तूल अघ नाम पावक समानं तरल तृष्णा तामी तरणि धरणि धरन सरनि भय हरण करुणा निधानं ९ देव बहुल बृंदार का बृं द बृंदारु पद बंदि मंदार मालोर धारी पाहि माही सु संताप संकुल महा दास तुलसी प्रणत रावनारी ।१०देव संसार कांतार पति घोर गंभीर घन महान तरु कर्म संकुल मुरारी वासना वल्लि षर कंटका कुल बिपुल निविड़ बिटपा टवी कठिन भारी ११ देव विविध चित्त वृत्ति खग निकर सेनो लूक काक कट गृध्रआ मिष अहारी अखिल खल निपुन छल छिद्र निरखत सदा जीव जन पथिक मन खेद कारी २ देव क्रोध करि मत्त मृग राज कंदर्प मद दर्प वृक भाल अ ति उग्र की महिष मत्सर क्रोध सूकर सूर फेरु छल दंभ मार्जार धर्मा ३ देव क प न मर्कट बिकट व्याघ्र पाखंड दुखद मृग ब्रात उत्पात कर्ता । हृदय अवलोकि यह शोक शरणागत पाहि मां पाहि भो विश्व कर्ता ४ प्रबल अ हंकार दुर्घट महीधर महा मोह गिरि गुहा निविडांध कारं चित्त वेताल म नुजाद मन प्रेत गण रोग भो गोघ वृश्चिक विकारं ५ देव बिषय सुख ला- लसा दंस मसकादि खल झिल्लि रूपादि सब सर्प स्वामी तत्र आक्षिप्त तव बि षम माया नाथ अंध भय मंद ब्यालाद गामी ६ देव घोर अवगाह भय आप गा पाप जल पूर दुः प्रेक्ष दुस्तर अपारायक षड वर्ग गो नक्र चक्रा कुलं कल सुभ सुभ तीव्र धारं ७ देव सकल संघट्ट पोच शोच बस सर्बदा दास तु लसी बिषम गहन गस्त त्राहि रघुबंश भूषण कृपा करि कठिन काल

विकराल कालि काल त्रस्त ८ प्रमाण श्रीस्वामी जू राम चरित कहु का
हि लगाय सुनि मति हूं भरमाय त्रिभुवन भावे प्रगट होइ के राघव जन्म
कहाय भावन हूं को राम प्रकासत ए तो पद ठहराय १ कोप मुनिन की
सिखा रूप धरि प्रगट जनकपुर आय रामप्रिया बन काज साधि पुनः
बन गें गयो समाय २ राम सिया को जनम करम नहिं तिनहीं उदित सु
भाय ते कैसे जानि हैं रे मदिरा अंचेहैं बैराग्य ३ देव भाव बानर भालू
तन धारि के भये सहाय त्रिभुवन भवि त्रिभुवन धनी बन रहा अवध में
छाय कुंभकर्ण अहंकार राम गर्व प्रहारी जाको छुवत गिरत ब्रह्मादिक
ज्ञानी होत असार परब्रह्म हूं निर्गुण भासा लगत अकारह कार १ सी
स ऊंचाई भुज बल औ द्वठ पद गत हिछचार सब को दुख दायक अति नि
र्दय संग अंग अपकार २ राम प्रथम ताके भुज काटे तब शिर काट प
चारि पद काटे तब हूं धर दोरत डारी सिंधु मझारि ३ तजे उचाई मान
गैरे तम धरिये दीन बिहार देव मुदित श्रीरामचंद्र पर बर्षत सुमन अ
पार ४ इंद्र जीत जो काम है सबहीं सतावत छल के मारत परगट मारत दी
रन में सुरनाम जाको नाम सुनत ही कांपें ब्रह्मादिक सुरधाम मुनि व्रतहि
नसावत १ ज्ञानी योगी बैरागिन को मोल लेत बिनु दान ज्ञान ध्यान
सब बिसर जात है चमकत आछो चाम तब नाच नचावत लषण यती ज
हि २ हनुमंतो ब्रह्म चरण विश्राम काम शत्रु इनहीं को पठवा काम हननको
राम तब मा मन आवत ३ इंद्र जीत छल बल करि हारा लक्ष्मण एक वा
णतें मारा बाज रहाहे देवन गारा मिटा जगत को घाम लागे गुण गावत
४ इत्यादि दोहा बेद रटत पुनि शास्त्र सब आगम सकल पुराण एक वा
क्य ता सबन के बेद्य एक भगवान १ अस दशामहं बिषमता चित्त समे न
बिरोध तहं दुविधा कहं पाइयतु जहं निज पूरण बोध २ जैसें लहरि समु
द्र में पृथक भाव दरसाय पलटि मिलत जब सिंधु में एक भाव है जाय ३
जैसे पुरवाली सकल कहूं बेर कहुं प्रीति कठिन परे जब नगर कोतव सब
एकै रीति ४ एक पिता के पुत्र बहु करत परस्पर रारि सुनि निंदा निज तातके
एकहि होहिं बिचारि ५ एक नगर के बहुत पथ सकल कुटिल बल जात
अंत प्राप्य एकै नगर नहिं बिरोध कछु तात ६ जैसे नाना देस ते चली नदी
बहु भांति भई अभेद मिल सिंधु में जैसे मति की पांति ७ आदि मध्य

अरु अंत लौं ज्यौं तरु वीज सरूप लघु दीरघ त्यौं ग्रंथ सब व्यापक वेद अनूप
८ निगमागम बहु मत कहत यदपि कांड त्रय भेद एक वाक्य ताके भये
एकै प्राप्य अखेद ९ प्रकृति दोष तें मोह तम छायो मति संसार। जल्पित क
ल्पित भेद बहु मत मदिरा मतवार १० गुरु श्रुति बचन बिचार रवि उदै दोष
निर्मूल।एक वाक्य ता ज्ञान लहि मिटत मोह मय मूल ११ वार्ता यह ले
रामायण की शंका में एक सत्यत्व दूसरो प्रसंग भेद में लिखासो सत्यत्व
में नाटक रीति करके और प्रसंग कालयुगादि कीएक वाक्य ताकरके क
ल्पभेद औदेवन में अभेद तें संशय नहीं जानो गयो सोरठा रामायण सि
द्धांत ज्ञान भक्ति संपुट कियो नाम रतन विख्यात प्रेम भक्ति मणि लेस तें॥
वार्ता प्रथम प्रकास में ज्ञानभक्ति संपुट में नाम रत्न को स्थापन कियो
दोहा।स्थान सर्ग बिसर्ग पुनि पोषण आदि बिचार दस लक्षण सु पुराण
के प्रथमहिं कहे उदार २ बेद अर्थ के बोध कह अंग शास्त्र षट मान। शा
स्त्र अंग में सबन को भाष्यो अर्थ सुजान ३ पूरब मीमांसा बिषे धर्म तत्व
प्रति पाद्य स्वर्गादिक फल धर्म को ज्ञान प्रयोजन साध्य ।४। वैशेषिक शा
स्त्रहि कियो सु मुनि कणादि अनूप। सप्त पदारथ ज्ञान फल भावाभाव स
रूप। न्याय शास्त्र गौतम ऋषि भाष्यो तर्क प्रधान प्रमाणादि षोडश
अरथ बोध प्रयोजन जानि ६ योग शास्त्र पातंजली मुनि कीनो सुख कंद
जावत वृत्ति निरोध तें टूटत भव को फंद ७ सांख्य शास्त्र को बिषय सुख
प्रकृति सुपुरुष विवेक हनि त्रिविधदुखमुक्ति सुख कपिल मुनि मनि टेक८
वेद व्यास बेदांत को आचार जबर लेखु जीव ब्रह्म के एकता बिषय मो
क्ष फल देखु ९ बहु शाखा साखी सुखद वेद अपौरुष वाक चार बेद
त्रय कांड फल मोक्ष अवांतर नाक १० तंत्र भाव में शिव कियो यंत्र मंत्र
मति पाद्य शंभु शक्ति के ज्ञान तें मोक्ष आदि फल साध्य ११ वार्ता द्वि
तीय प्रकाश में पुराण शास्त्र बेद तंत्र को सिद्धांत अर्थ लिख्यो दोहा।
भरत आदि साहित्य के आचारज मति चारु कथित तासु दस कर्म फल
रामायण सिंगारु २२ वार्ता तृतीय प्रकाश में यावत्काल व्यंग निरूप
न कियो चतुर्थ प्रकाश में प्रसंग अंग करके यावत् रामायण तात्पर्य
और छंद दोहा चौपाई को नेम कियो दो॰ लंका शंका दहन को
हनुमत बुद्धि उदार मुख्यप्रश्न उत्तर लिखो सद्गुरु सुमति उदार २३

वार्ता पंचम प्रकाश मे मुख्य मुख्य शंका समूह को समाधान कियो
दोहा। अमर सिंह आदिक जिते कोश कार स उदार बिषम शब्द के अ
र्थ को परकाशक उपकार २६ वार्ता छठे प्रकाश मे कोश अंग करके बि
षम पदन को मुख्य अर्थ उद्धार कियो सप्तम प्रकाश में बिश्राम अंग
करकें नाटक रीति भाव प्रधान सें रामायण जू कथा भाग से सगुण प्र
तिपादक औ अंतर आसय ते परमारथ पक्ष सत्यत्व प्रति पादक यह
निरूपण कियो औ प्रसंग के भेद में देवतन को अभेद जनाय के अनं
त शक्ति प्रभु में सब अधिरूढ़ जानो चाहिये और कलियुग अवस्था
इत्यादि समदरसायो और प्रथम लिख आये तो मुख्य अर्थ है सो ए
ही अक्षरन सों ज्ञात है और जो शंका करत हैं यह जो सप्तम अंग लि
ख आये याते प्रगट बाध होइ गो एतेक्क में जो शंका करें तहां प्रमाण
चौ॰ एतेक्क पर करहिं जे शंका मोहि ते अधिक ते जड़ मति रंका। इति
दोहा। करि प्रसंग के अंग ते हरि यश हेतु जनाय यथा भाउ समता लि
षि खद्योतो गनिजाय १ रामायण सर सिज सरिस चहियत भानु प्रकाश
यह प्रसंग खद्योत इव किमि कर सकत बिकाश २ रामायण के अर्थ को
को समर्थ मति वंत यथा सिंधु खग चोंच भरि तृप्ति लहत नहिं अंत ३
को तुलसीभाषा कथन कौन वेद को सार कौन कोश तिहिं तिलक कोचा
ही कहत गंवार ४ मत्सर मद माया मदन मारे मान मरोर। रामायण
जाने कहा पर धन परतिय चोर ५ कवि कोविद रघुबर भगत मानस मा
न सुजान कीसन सिंधु गंभीरता मंदिर गिरि पहिचान। मानस पारावा
र को पार वार को जान मंदिर गिरि बूड़त जहां मम मति की परमान
७ अष्टादश षट संहिता यामल तंत्र बिचार धर्मनीति श्रुति सागर हि
तुलसीकृत बिस्तार॥ बरवै॥ श्रीकाशी पति पितु की आज्ञा पाइ द्वि
गज राज कथनि नम मेल्ल मिलाइ ९ चौ॰ सरल अरथ आखर कीघोरी
सहल प्रमान सांत रस बोरी दूर देश दरसावन हारी। अनक सग निधुवि मल
तमारी॥१०॥ इति श्री रघुनाथ दास कृत मानस दीपिका
टीकायां बिश्राम अंग सप्तमः ७ प्रकाशः मानस दी
पिका समाप्ताः संवत १९३० कार्तिक शुक्ला ११ शनि वासर॥

विज्ञापन पत्र

यह पुस्तक अर्थात् रामायण तुलसीकृत जो अति प्रसिद्ध और बहुधा देहली और मेरठ और बनारस के यन्त्रालयों में छपी है इस छापेखाने में प्रथम वार पद२ पृथक् २ करके छपी है-कि हजारों अशुद्धियां जो पहिली छपी हुई में वर्तमान थीं अनेक प्रतियों से यन्त्रालय के पण्डितों ने यथा शक्ति शुद्ध की और कोश उसका क्रिया पद सहित अति श्रम से रचना किया गया कि जिस का हाल देखने और पढ़ने वाले बिचार करें गे-

उक्त रामायण के विशेष हमारे यन्त्रालय की पहली छपी हुई रामायण जो अति शुद्ध और सब भारत वर्षीय भर में अति विख्यात और प्रचलित है अबतक ५०००० पुस्तकें छपी हुई वर्तमान हैं-

विशेष इन रामायणों के एक और रामायण बहुत श्रेष्ठ और बहुत मोटे अक्षरों की जो आज तक हिन्दुस्तान के किसी यन्त्रालय में नहीं छपी मुद्रित हो रही है कि जिस को बालक और वृद्ध भी दूर से बाच सक्ते हैं जिस को दरकार हो हमारे छापे खाने से पत्र की द्वारा महसूल अदा कर के मंगा ले-

और जो इस रामायण को सौदागरी तौरपर ख़रीद करें गे उन को कमीशन भी दी जावे गी-

उक्त रामायणों के विशेष बहुधा फ़ारसी, अरबी, और उर्दू पुस्तकें इस यन्त्रालय अर्थात् मुंशी नवल किशोर लखनऊ और कानपुर में छपी हुई वर्तमान हैं जिसकी फ़ेहरिस्त छपी हुई वर्तमान है जिस मनुष्य को लेना मंज़ूर हो पत्र के द्वारा मंगाले और हर तरह का काम शिला-क्षर और शीशाक्षर और फ़ारसी और अरबी इस छापेखाने में मुद्रित हो सक्ता है-

और महाभारत भाषा जो अनेक छन्दों में काशी नरेश महाराजाधिराज की आज्ञा से कलकत्ते के किसी छापे खाने में छपी थी हमारे टैप के कारख़ाने में उत्तमता से छप रही है और शीघ्रही वह महासागर १८ पर्व्व सब लोगों को जो इस के इच्छिक हैं प्रगट होगा जिन को ख़रीदना मंज़ूर हो मुन्शी नवल किशोर के यन्त्रालय से दरख़्वास्त करें

इतिहास

"बालमीकि नारद घट योनी।
निज निज मुखनि कही निज होनी" पृष्ट २

बालमीकि जी ने राम जी से कहा कि मैं पहिले व्याधा का काम करके अनेक जीवों का घात किया करता और उनका द्रव्य हरण करके अपने कुटुम्बों का पालन करता एक दिन सप्तऋषियों से अकस्मात् मार्ग में भेंट भई सो उनका भी जीव घात करने के लिये मैं तत्पर हुआ तब उन्हों ने मुझे अत्यंत आतुर समझ के शिक्षा दिया सो उनके उपदेश से आप का नाम विपरीत करके मरा मरा जपते २ मैं इस स्वधर्म गति को प्राप्त हुआ कि आप साक्षात् ईश्वर मेरे स्थान विषे पधारे॥

जब वेदव्यास पुराणों को बनाय चुके परन्तु उन्हें संतोष न भया तब नारद जी से कहा कि महाराज इसका कारण क्या नारद जी बोले सुनों मैं पूर्व में दासी पुत्र रहा परंतु मेरी माता जिस के यहां काम करती थी वे साधु सेवी रहे उनके स्थान में साधु लोग आवैं तब साधुओं का झूठा भोजन जो शेष बचे उसे मैं खाऊं और उनकी सेवा किया करूं उस से मेरी ऐसी निर्मल बुद्धि हुई और इस गति को प्राप्त हुआ अतएव सत संगति की महिमा है इस से अब तुम कुछ भगवत जस कहो तब तुम्हें संतोष होगा तब व्यास जी ने भागवत बनाया॥

और अगस्तिऋषि ने महादेव जी से कहा कि मेरे पिता मित्रावरुण तप करते थे कि आकाश मार्ग से रंभा शृङ्गार किये जाती थी सो उनकी दृष्टि पड़ी काम उत्पन्न भया तब मित्रावरुण ने वीर्य को घट में रख दिया उससे मेरी उत्पत्ति हुई इस से मैं घटज हुआ सो ऐसी नीच बुद्धि और नीच स्थान से मैं उत्पन्न हुआ परंतु सत-संग से इस दशा को प्राप्त हुआ॥

"सियनिंदक अघ ओघ नसाए।
लोक विसोक बनाइ बसाए" पृष्ट ९

अयोध्या में जब श्रीरामचन्द्र राजा रहे तब एक रजक की स्त्री बिना पति की आज्ञा पिता के भवन चली गई तीन दिन के उपरांत जब वह पति के गृह आई तब वह रजक बोला कि तू मेरे घर से जा मैं घर में नहीं रखूंगा मैं राम नहीं हूं कि सीता ११ ग्यारह महीना रावण के घर में रही फिर उसे अपने गृह में रख के रानी बनालिया ऐसा व्यंग वचन कह के स्त्री को निकाल दिया इस को सुन रामचन्द्र जी ने जानकी को घर से निकाल दिया और अयोध्या पुरी में बसने से रजक को सीता के निन्दा के पाप से क्षमा करके परम धाम दिया॥

"महिमा जासु जान गनराऊ।
प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ" पृष्ठ १०

ब्रह्मा ने सब देवतों से कहा कि प्रथम पूज्य पद के योग्य कौन है सो यह सुन सब देवता आपस में लराई करने लगे तब ब्रह्मा बोले कि तुम सब में से पृथ्वी की परिक्रमा करके जो मेरे पास पहिले आवैगा उसी को प्रथम पूज्य पद हम देवेंगे सब देवता अपने २ वाहन पर बैठ के दौडे पर गणेश जी मूसे पर सब के पीछे पड़ गए और कार्य्य की हानि समझ अत्यंत व्याकुल हुए तहां नारदजी उनको मिले और इन के परिताप का कारण सुन कहा कि तुम पृथ्वी में राम नाम लिख के उस को प्रदक्षिणा कर ब्रह्मा के पास चले जावो तब गणेश जी वैसाही कर ब्रह्मा के निकट गये और जब और सब देव भी ब्रह्मा के सन्मुख आये तब ब्रह्मा आदि सब देवतों ने मिलके श्रीराम नाम को महिमा समझ गणेश जी को प्रथम पूज्य पद दिया इस से राम नामकी महिमा है॥

दूसरी कथा। महादेव जी ने श्यामकार्त्तिक औ गणेश जी दोनो पुत्रों से कहा कि जो पृथ्वी की परिक्रमा करके पहिले मेरे पास आवै उसी को हम प्रथम पूज्य पद देवेंगे सो सुन श्यामकार्तिक मोर पर बैठ के अगाड़ी गए और गणेश जी मूसे पर पीछे पड़गए तहां देरी देख के नारद के उपदेश द्वारा नाम की परिक्रमा कर महादेव के पास गए तब शिव जी ने ध्यान पूर्वक विचार कर और श्री राम नाम की महिमा स्मरण कर गणेश जी को प्रथम पूज्य पद दिया॥

"सहस नाम सम सुनि सिव बानी।
जपि जेई पिय संग भवानी" पृष्ठ ११

एक समैं महादेव जी पाक बनाय थाल में परोस पार्वती को पुकारा हे प्रिया आवो भोजन करें तब पार्वती बोली कि मैं विष्णु सहस्र नाम का पाठ करके तब प्रसाद पाती हूं सो अभी पाठ नहीं किया तब महादेव जी बोले कि हे पार्वती श्री राम नाम जो है सो विष्णु के सहस्र नाम के तुल्य है सो एक बार राम नाम उच्चारण कर आय के भोजन करो तब पार्वती जी ने ऐसा ही किया तब महादेव जी इनके मन की प्रीति निश्चय पूर्वक और अपने वचन का विश्वास देखि के अति प्रसन्न होय पतिब्रता सिरोमनि किया और ऐसा भी है कि गौरी शंकर अर्द्धाङ्गी स्वरूप तभी से हुआ॥

"अत एव हरषे हेतु हेरि हरही को।
किय भूषन तिय भूषन ती को"॥
"नाम प्रभाव जान शिव नीको।
काल कूट फल दीन्ह अमी को" पृष्ठ ११

जब विष्णु ने कच्छपावतार लेके समुद्र को मथा तब उस में से चौदह रत्न नि-
कले सो सब देवता प्रसन्न होय अपनी २ इच्छा के अनुसार तेरह रत्न को बांट लिया
और चौदहवां रत्न जो कालकूट अर्थात् हलाहल विष के निमित्त सब देवता महा-
देव जी का स्मरण कर इन से कहा कि महाराज इस विष से बचाइए नहीं तो
यह अपनी ज्वाला से तीनों लोक को भस्म कर देगा तब महादेव ने श्रीराम यह
शब्द मुख से उच्चारण कर उठाय के पीगए उस के प्रताप से उस विषने अमृत का
फल दिया कि अमर हो गए ॥

"ध्रुव सगलानि जपेउ हरि नाऊं।
पाएउ अचल अनूपम ठाऊं" पृष्ट १३

स्वायंभू मनु के पुत्र राजा उत्तानपाद के दो स्त्री थीं तिसमें बड़ी रानी के
पुत्र ध्रुव हुए सो एक समय राजा छोटी रानी जिस पर राजा की अत्यन्त प्रीति
थी उसके पास बैठा था उस समय ध्रुव जाके पिता की गोद में बैठ गए तब रानी
ने ध्रुव को गोदी से उतार यह कहा कि मेरे पेट से जन्म लेते तब इस गोदी के
अधिकारी होते इस बात को सुन ध्रुव ग्लानि से अपनी माता से जाय कहके तप
करने को चले पश्चात् राजा ने आप ध्रुव को बहुत समझाया राज्य देने कहा
परन्तु ध्रुव नहीं फिरे वहां नारद ने ज्ञान उपदेश दिया सो जप करके सबके परे
लोक के अधिकारी भए ॥

"ब्रह्म सभा हम सनदुख माना।
तेहितें अजहुं करहिं अपमाना" पृष्ट २८

महादेव जी कहते हैं कि हे सती ब्रह्मा की सभा में विष्णु आदि सब देवता
के साथ हम बैठे रहे सो उस समय में दक्ष तुम्हारे पिता आए सो उन्हें देख सब
देवता उठे परंतु मैं और मेरे संग ब्रह्मा विष्णु नहीं उठे सो दक्ष क्रुद्ध होय उस
सभा में कुवाच्य मुझे कहा और तभी से द्वेष मान मेरी प्रतिष्ठा होन करने में
उद्यत रहे और अपने यज्ञ में हमें न्योता नहीं दिया ॥

"दक्ष सुतनि उपदेसेन्हि जाई।
तिन्हफिरि भवनन देखा आई" पृष्ट ३५

जब दक्षप्रजापति ने प्रथम बहुत से पुत्र उत्पन्न करके आज्ञा दिया कि सृष्टि करो
तब वे सृष्टि के अर्थ तप करने को गये वहां नारद ने उन्ह सबों को ऐसा ज्ञान
उपदेश किया कि सब के सब विरक्त होय बन में तप करने लगे दक्ष के गृह में
फिर नहीं आए तब दक्ष ने कन्या उत्पन्न करके सृष्टि को बढ़ाया सो हे पार्वती
नारद शिक्षा सुन के घर छोड़ के वे भिखारी हुए ॥

"चित्र केतु कर घर उन्ह घाला" पृष्ट ३५

आगे फिर चित्रकेतु राजा का समाचार सुनो चित्रकेतु राजा की कोटि स्त्री थीं परंतु लड़का एक नहीं तब किसी मुनि के आशीर्बाद से छोटी रानी के एक पुत्र उत्पन्न भया जब वह लड़का वर्ष भर का भया तब कोटि रानियों ने उस लड़के को विष देके मारडाला तब वह मृतक लड़के को राजा गोद में लिए विलाप करता था कि नारद जी आये राजा को ज्ञान उपदेश करने लगे परंतु राजा को ज्ञान न हुआ तब नारद जी ने उस लड़के को जिलाय कहा कि देखो तेरे मरने से राजा अति व्याकुल है तब वह बोला कि हे राजा मेरी पूर्व जन्म की कथा सुनो मैं पहिले जन्म में राजा रहा सो राज्य से विरक्त होके बन में जाय भिक्षा मांग हरिभजन करता था एक दिन एक स्त्री ने मुझे गीला गोइठा दिया उसके भीतर चिउंटी रहीं अग्नि के संस्कार से सब मरगईं सो सब चिउंटी यह तुम्हारी कोटि स्त्री हैं जिस स्त्री ने गीला गोइठा दिया रहा वह यह मेरी माता है औरमैंने उस पाप से इसके उदर में जन्म लिया है सो यह कोटि स्त्रियों ने अग्नि के पूर्व जन्म का बदला लिया यह कह वह लड़का फिर मरगया और राजा चित्रकेतु राज्य छोड़ बन में तप करने को चले गये ॥

"कनककसिपु कर पुनि अस हाला" पृष्ट ३५

आगे कनककसिपु अर्थात् हिरण्याक्ष की स्त्री कयाधू जब गर्भवती रही तब नारद जी ने उसको ज्ञान उपदेश दिया सो गर्भही में प्रहलाद को ज्ञान उत्पन्न भया सोई ज्ञान से बिष्णु नरसिंह रूप धर हिरण्याक्ष का वध कर प्रहलाद को राज तिलक किया; नारद के उपदेश से दैत्यकुल का नाश भया ॥

"कस्यप अदिति महातप कीन्हा ।
तिन्हकहंमैं पूरबबर दीन्हा" पृष्ट ८३

किसी समय कस्यप अदिति ने तपस्या कर बिष्णु से यह बर मांगा कि जब २ आप अवतार लेवें तब तब हम हीं आप के माता पिता होवें इसलिये प्रत्येक अवतार में यही माता पिता हुए यहां भी दशरथ कौसल्या में इनका अंस दिखला के पूर्व बरदान को सिद्ध किया ॥

"पूछा मुनिहिं सिला प्रभु देखी ।
सकल कथा मुनि कही बिशेषी ॥ दोहा ॥
गौतम नारि स्राप बस उपल देह धरि धीर ।
चरन कमल रज चाहति कृपा करहु रघुबीर" पृष्ट ९३

किसी समय ब्रह्मा ने अपनी एक कन्या का नाम अहिल्या धरा जिसको परम सुन्दरी देख सब सुर मुनि मोहित हो इच्छा करने लगे तब ब्रह्मा बोले सब देवतों में जो पहिले पृथ्वी की परिक्रमा करके आवे उसे यह कन्या हम देंगे सब

देवता पृथ्वी की प्रदक्षिना करने को गए और गौतम ऋषि ने पृथ्वी गौ रूप जो ब्रह्मा के स्थान में बैठी रही उस की प्रदक्षिना कर ब्रह्मा से कन्या मांग लेकर अपने घर गए तब से इन्द्र के जी में यह हुआ कि किसी प्रकार से अहिल्या के संग में भोग करें एक दिन गौतम ऋषि संध्या करने को गए तब इन्द्र गौतम ऋषि का स्वरूप धर द्वार पर पुकार अहिल्या से कहा कि हम कामातुर हैं अहिल्या ने कहा कि महाराज इस वेला में आप का ज्ञान कहां गया उत्तर दिया कि तू पति-व्रता है पति के वचन को मान तब वह आज्ञा भंग न कर सकी और कार्य की सिद्धि में तत्पर भई उसी समय गौतमऋषि ने द्वार पर पुकारा यह पति का शब्द पुन: सुन चिंता में होय कोप कर इन्द्र से पूछा कि सत्य बोल कौन है तब इंद्र-ने डर कर कहा अहिल्या इंद्र को बिलार बनाय छिपा के किवाड़ा खोल दिया तब ऋषि ने पूछा कि इतनी देर काहे लगी वहां अहिल्या पति से मृषा वचन बोली परंतु ऋषि महाराज छल देख कोप कर इंद्रको श्राप दिया कि तेरे सब शरीर में सहस्र भग हो जांय और अहिल्या को श्राप दिया तैं सिला हो जाय। राम चन्द्र से तेरा उद्धार होगा॥

" गाधि सुवन सब कथा सुनाई।
जेहि प्रकार सुरसरि महि आई " ॥ पृष्ट ९४ ॥

हे राम तुम्हारे कुल में एक सगर नाम राजा हुए तिन की केशी और सुमती रानी थीं परंतु पुत्र के न होने से राजा दुखी हो स्त्रियों समेत बनमें जाय तप करने लगे तहां सौ वर्ष बीतने पर भृगु मुनि के वरदान से केशी के एक पुत्र असमंजस और सुमती के साठ हजार पुत्र हुए असमंजस केशी का पुत्र प्रति दिन अयोध्या के बालकों को नाव पर बैठाय सरजू में बोर दिया करता इसमें प्रजा बहुत दुखी हो राजा के पास गई तब राजा ने असमंजस को देश से निकाल दिया कुछ दिन के उपरांत राजा अपना चौथा पन समझ के हिमगिरि पर जाय अश्व-मेध यज्ञ का प्रारंभ कर दिगविजय के हेतु घोड़ा छोड़ा तहां इन्द्र छलके साथ घोड़ा चुरा कपिल मुनि के स्थान में बांध दिया तब राजा की आज्ञानुसार सुमती के साठ हजार पुत्र घोड़ा की खोज में फिरते २ कपिल मुनि के स्थान में घोड़े को बंधा देख क्रोध से परुष वचन बोले सो सुनके कपिल मुनि ने क्रोध पूर्वक जो देखा तो सब भस्म होगये और इधर राजा को जब इनकी सुधि न मिली तब असमंजस के पुत्र अंशुमान को खोजने के लिये भेजा तहां सुमती के भाई गरुड़ पक्षिराज से मार्ग में भेंट भई तब उन्होंने सब हाल कहा यह सुन अंशुमान गरुड़ के संग कपिल मुनि के पास गए उनसे विनती कर घोड़ा ले आय के राजा से सब समाचार कहा इससे राजा बड़े सोच में हुए फिर यज्ञ पूर्ण कर कुछ काल राज्य करके प्रजा को सुख दिया फिर अंशुमान को राज्याभिषेक कर आप सुर धाम को गए पश्चात्

अंशुमान अल्पकाल राज्यकर अपने पुत्र दिलीप को राज तिलक दे गंगा के निमित्त तप करने को गए तपही में शरीरांत होगया फिर दिलीप अपने पुत्र भागीरथ को राज्य दे और सब समाचार कह बनमें जाय गंगा निमित्त तप करते शरीरांत कर दिया तब भागीरथ पिता का समाचार कुछ न पाय अपने पुत्र काकुत्स्थ को राज्य दे और समाचार कह वनमें तप करने गए तहां हजार बर्ष एक पद से दोनो भुजा उठा के सूर्य्यके सन्मुख खड़े रहे यह देख ब्रह्मा ने प्रसन्न होय के कहा कि वर मांगो तब भागीरथ ने मांगा कि गंगा जी को दो तब ब्रह्मा बोले कि गंगा का भार कौन सहेगा मृत्यु लोक को लिए पाताल को चली जायगी सो महादेव का आराधन करो वे संभालें तो हम दें तब भागीरथ ने महादेव का जप किया तब वे प्रसन्न हो भागीरथ का वचन अंगीकार कर अपने जटा को संवारा तब ब्रह्मा की आज्ञानुसार गंगा जी अति अभिमान युक्त चलीं कि महादेव के समेत रसातल को जाऊंगी परंतु एक बर्ष पर्य्यन्त जटा में भूल गईं जटा की थाह न मिली तब महादेव जीने एक बूंद जटा में से भागीरथ को दिया तिसकी तीन धारा भई एक मंदाकिनी नाम स्वर्ग को गई दूसरी प्रभावती नाम पाताल को गई तीसरी मृत्यु लोक में गंगा भागीरथ के साथ हरिद्वार प्रयाग काशी होके सगर के पुत्रों को परधाम भेजती समुद्र मे जाय मिली ॥

" सुमिरि सोय नारद बचन उपजी प्रीति पुनीत ।

चकित बिलोकति सकलदिसि जनु सिसु मृगी सभीत " पृष्ठ१०१

एक समय जानकी जी गिरिजा पूजन के निमित्त जाती थीं तहां मार्ग में नारद मिले जानकी ने दण्डवत करके कहा कि महाराज देवी की पूजा करने को जाती हूं तब नारदने प्रसन्न हो आशीर्वाद दिया कि हे जानकी इसी गिरिजाबारी में श्री रामचन्द्र तुम्हारे पति तुम्ह को मिलेंगे तब जानकी ने पूछा कि महाराज हम कैसे चीन्हेंगी तब नारद बोले कि इस बगीचे में जिसको देखने से तुम्हारा मन लोभित होजाय उसी को जानना कि यही मेरे पति हैं ॥

" कहं कुंभज कहं सिंधु अपारा ।

सोखेउ सुजस सकल संसारा " पृष्ठ १५२

एक समय किसी चिड़िये के तीन बच्चे को समुद्र बहाय ले गया तब वह प्रति दिन अपने चोंच से पानी भर भर कर बाहर फेंका करे इस अभिमान से कि समुद्र को उलच डालें अगस्त्यिऋष्य ने यह समाचार देख उससे पूछा तब पक्षी ने कारण कहा यह सुन के दया संयुक्त उससे कहा कि समुद्र जड़ निर्दई है इसका दण्ड हम करेंगे यह कह कर चले गए किसी काल में अगस्ति जी समुद्र के तीर बैठे जप पूजा कर रहे थे कि समुद्र की तरंग इनके पास आय के पूजा की सामग्री को नष्ट कर दिया तब वह पक्षी की बात स्मरण करके तीन अंजुली में अर्थात् राघवायनमः

केशवायनमः वासुदेवायनमः ऐसा उच्चारण कर पी गए वह बहुत काल तक सूखा पड़ा रहा फिर देवतों ने कुंभजऋषि से बहुत निवेदन किया तब प्रसन्न होय लघु-शंका करके फेर भर दिया ॥

"माता पितहिं उरिन भए नीके।
गुरु रिन रहा सोच बड़ जीके" पृष्ट ११९

परशुराम के पिता यमदग्नि औ माता रेणुका नहाने को गई वहां जलमें मछली को क्रीड़ा करते देख के इच्छा भई कि मैं भी घर जाय पतिके संग ऐसेही क्रीड़ा करूं सो कामातुर आय के यमदग्नि से कहा कि हमें ऐसी इच्छा है यह सुन ऋषि को कोप उत्पन्न भया तब तीन बेटे जो और थे उन्हसे कहा कि इस का मूड़ काट डालो उन्होंने आज्ञा न माना तब ऋषि ने तीनों लड़कों को भस्म कर दिया फिर परशुराम को बुलाय के कहा सो परशुराम ने पिता की आज्ञा सुनतेही झट फरसे से माता का सिर काट डाला तब ऋषि प्रसन्न होय बोले कि पुत्र वर मांग तब परशुराम ने मांगा कि तीनो भाइन समेत माता को जिलाय दीजिये सो ऋषि प्रसन्न होय चारों को जिलाय दिया औ यमदग्नि का मूड़ एक क्षत्री सहस्रबाहु ने काट डाला इस निमित्त सारे पृथ्वी के दीन क्षत्रियों का सिर इन्होंने काटा ॥

"कद्रू बिनतहिं दीन्ह दुख तुमहि कौसिला देब" पृष्ट १६५

कस्यप मुनि की दो स्त्री तिस में सर्प की माता कद्रू औ पक्षी की माता बिनता सो कद्रू ने बिनता से पूछा कि सूर्य्य के घोड़े की पूंछ कौन रंग है बिनता ने उत्तर दिया कि उज्ज्वल है कद्रू बोली नहीं श्याम रंग है इसमें दोनों ने प्रति उत्तर करके यह बात ठहराईं कि हम में जो हारै सो दासी बन के रहै यह निश्चय करने के निमित्त दोनों चलीं तहां कद्रू की आज्ञानुसार सर्प जाय के घोड़े की पूंछ में लपट गए तब कद्रू ने छल से बिनता को दिखला दिया कि देखो पूंछ का रंग काला है बिनता लज्जित होय दासी भाव अंगीकार कर सेवा में रहने लगी ॥

"कहहू चेरि सुधि अहहू कि नाहीं।
स्वामिनि कहेउ कथा मोहि पाहीं॥
दुइ बरदान भूप सन थाती।
मागहु आजु जुड़ावहु छाती" पृष्ट १६६

एक समें दैत्यों ने लड़ाई करके इन्द्र को पराजय किया तब इन्द्र राजा दसरथ के पास आ इन्हें दैत्यों पर चढ़ा ले गए तहां कैकेई भी गई रही युद्ध में दसरथ के रथ का चक्रावलंब टूट गया यह कैकेई देख रथ पर से उतर अपनी भुजा पर चक्र का आधार कर लिया जब दसरथ महाराज ने दैत्यों को पराजय कर जय पाई

तब कैकेई बोली कि महाराज रथ से उतरिये तब ज्योंही महाराज उतरे और कैकेई ने हाथ को खींच लिया रथ टूट पड़ा यह समाचार देख दशरथ ने प्रसन्न होकर कहा कि आज जय तेरी सहायता से हुई दो बरदान जो तू मांग सो हम देवें तब कैकेई बोली महाराज यह दोनो बरदान मेरी थाती रख छोड़िए जब मुझे कार्य्य होगा तब मांग लूंगी ॥

"सिवि दधीचि बलि जो कछु भाषा।
तनु धनु तजेउ बचन पन राषा।" पृष्ट १७०

राजा सिवि जब ९२ यज्ञ कर चुके और आगे फिर प्रारंभ किया तब इन्द्र भय में प्राप्त भया कि अब मेरा पद लेने में आठ यज्ञ बाकी है उसने अग्नि को कपोत बनाया और आप बाज बन उस के मारने को चला तब वह भागा हुआ राजा की सरन में गया राजा ने उसका बचन सुन बाज को देख यज्ञशाला में अपनी गोदी में छिपा लिया और बाज को निवारन किया बाज बोला कि महाराज आप यहां यह क्या अनर्थ करते हैं कि मेरा आहार छीन लिया मैं भूख से शरीर को छोड़ आप को पापभागी करूंगा तब राजा ने कहा कि इसे तो नहीं देंगे इसके पलटे में जो मांगेगा सो देंगे पश्चात् इस प्रतिउत्तर में यह बात ठहरी कि राजा कबूतर के तुल्य तौल के अपने शरीर का मांस दे तब हम कबूतर को छोड़ देवें इस बात पर राजा प्रसन्न होय तुला पर एक ओर कपोत को बैठाय दूसरी ओर अपने शरीर का माँस काट के चढाने लगे परंतु सब शरीर का मांस काट काट के चढ़ाय दिया कबूतर के समान नहीं भया तब राजा ने गले पर खड्ग चलाया त्योंही बिष्णु ने हाथ पकड़ अपने लोक को भेज दिया ॥

जब वृत्रासुर के कष्ट से इन्द्र देवों के समेत अति दुखी होय बिष्णु के पास गए तब उन्हों ने उत्तर दिया कि राजऋषी दधीच जो नैमिषारण्य में तप करते हैं उनका हाड़ तुम लोग ले आवो तब उस हाड़ से शस्त्र बने तब उस शस्त्र से यह दैत्य पराजय होगा तब इन्द्र ने सब देवों के समेत दधीच ऋषी के पास जाय निवेदन कर अस्थि उनसे मांगा तब ऋषी ने अति प्रसन्न होय अपनी अस्थि देवों को दे शरीर को छोड़ा इन्द्र ने अस्थि ले बज्र बनाय के वृत्रासुर को पराजय किया ॥

जब राजा बलि ने अपने भुजाबल से तीनो लोक का राज्य अपने आधीन कर लिया तब इन्द्र ब्याकुल हो बिष्णु के पास गए तब बिष्णु ने इन्द्र को भरोसा देकर कहा कि तुम धीरज धरो हम कुछ उपाय कर तुम्हारा राज्य दिलवाय देंगे ऐसा कह इन्द्र को बिदाकर आप कस्यप वामन रूपधर राजा बलि के यहां भिक्षा मांगने को गए तब राजा बलि से बचन बांध के साढ़े तीन पैर पृथ्वी मांगा राजा बलिने जल हाथ में ले संकल्प कर दिया तब वामन जी ने बिराट रूपधर तीन पैर में तीन लोक को नाप लिया अब आधा पैर जो बाकी रहा तब राजा से कहा कि महाराज आधा पैर और दीजिए तब राजा ने अपनी पीठ निहुराय दिया कि महाराज आधे

पैर में पीठ को नाप लीजिए पीठ पर पैर रख के पाताल को भेज दिया और प्रसन्न हो के कहा कि वर मांगो तब राजा बलि ने यही मांगा कि महाराज यह वामन स्वरूप आप मेरे द्वारपर खड़े रहिए ॥

"शिवि दधीच हरिचंद कहानी" पृष्ट १७७

एक समय वशिष्ठ जी ने विश्वामित्र से राजा हरिश्चंद्र की बड़ाई किया कि रघुवंश ऐसा राजा नहीं हुआ सो विश्वामित्र ने राजा के परीक्षार्थ तप बल से स्वप्न में राजा से राज्यभंडार सब संकल्प ले लिया और प्रातःकाल जाय के कहा कि आपने रात्रि को राज्य हमैं संकल्प कर दिया परंतु उसकी दक्षिना दीजिये और राज्य छोड़ दीजिये यह सुन राजा ने विनती किया कि महाराज मेरे पास कुछ नहीं है इसमे यह ऋण रहैगी हम उद्योग करके भर देवेंगे ऐसा कह स्त्री और पुत्र को ले राजा राज्य छोड़ काशी को चले बाट में भी विश्वामित्र ब्राह्मण का स्वरूप धरके जो जो शरीर पोषनार्थ किसी उद्योग से इनको मिले सो भोजन की वेला आय के मांग लेवैं इस तरह बड़े २ दुःख सहते राजा काशी में आए तब विश्वामित्र ने कहा कि महाराज मेरी ऋण दे दीजिए तब राजा ने स्त्री पुत्र को किसी राजा के यहां पलटे में रख के कुछ धन लेके विश्वामित्र को दिया और शेष जो रहा उसके निमित्त आप मसान के अधिकारी के यहां अपने को प्रतिनिधि किया तब उस मसानाधिकारी ने राजा हरिश्चन्द्र को मसान घाट पर मुर्दों का कर लेने को नियत किया वहां रह के अपने स्वामी का काम धर्मपूर्वक किया करें फिर बिश्वमित्र ने राजा हरिश्चन्द्र के लड़के को तप से मारडाला तब उस मुर्दे को उसकी माता जलाने के लिए मसान घाट पर आई तब राजा ने कहा यहां जो कर नियत है सो देओगी तब फूकने पावोगी तब स्त्री रोके बोली कि महाराज मैं तुमारी भार्य्या हूं और यह पुत्र है दैव की विपरीतता से इस दशा को प्राप्त भई हूं अब मेरे पास एक कौड़ी नहीं है कर हम कहां से देवैं इस बात को सुन राजा हरिश्चन्द्र ने कहा मैं धर्म का निरादर नहीं करूंगा इस से बिना कर दिए नहीं फूकने पावेगी तब वह स्त्री लाचार होके अपने तन का वस्त्र देने के लिए उतारने लगी तब स्त्री को नग्न देख देवतों ने हांहां शब्द किया निदान तब अच्छी भांति धर्म की परीक्षा बिश्वामित्र लेके प्रगट होय राजा हरिश्चन्द्र की बड़ी बड़ाई किया और बंधन से निवारन कर इनको राजधानी अयोध्या में भेज दिया ॥

"हठबस सब संकट सहे गालव नहुष नरेश" पृष्ट १८२ ॥

गालवऋषि ने जब बिश्वामित्र से विद्या पढ़ के कहा कि दक्षिणा मांगो तब विश्वामित्र बोले दक्षिणा न लेगें इसमें गालव ने प्रति उत्तर करके हठ किया तब इनको हठी देख बिश्वामित्र ने हाज़ार श्यामकर्ण घोड़ा मांगा यह सुन गालवऋषि घोड़े की खोज में चले ढूंढते २ तीन राजा के यहां दो २ सौ घोड़े मिले परंतु उन राजाओं ने यह कहाकि मेरे पुत्र नहीं है इससे पुत्र के पलटे में घोड़ा देंगे फिर गालवऋषि ययातिराजा के पास जाय उनसे कन्या मांगा उस कन्या को वर था

कि जो चाहे उससे पुत्र उत्पन्न करले परंतु वह कुंआरी ही बनी रहे वह कन्या ले आय तीनों राजा को पुत्र उत्पन्न कराय छः सौ घोड़े लेके शेष के लिए निरास होय विश्वामित्र के पास जाय निवेदन किया तब विश्वामित्र ने भी दो सौ घोड़े की कीमत की एक पुत्र जान के उस कन्या मे दो पुत्र उत्पन्न कर लिया और छः सौ घोड़े ले गालवऋषि को आशीर्वाद दे विदा किया ॥

"सुर पुरतें जनु खसेउ ययाती" पृष्ठ २१६ ॥

ययाति राजा यज्ञादि धर्म का आचरण करके सदेह इन्द्र पद के लिए इन्द्रलोक को गए तब इन्द्र आगे से आय इनका सत्कार कर ले जाय के सिंहासन पर बैठाय छल के साथ बहुत बड़ाई करके इनसे पूछा कि राजा कहो तो तुम ने कैसे२ धर्म किए हैं कि जिन के प्रताप से मेरे पद को प्राप्त भए तब ययाति राजा अपने पुण्य को बहुत बड़ाई के साथ इन्द्र को सुनाने लगे और पुण्य क्षीण होने लगा जब कहते २ समस्त पुण्य क्षीण हो गया तब इन्द्र की इच्छानुसार देवतों ने ययाति राजा को स्वर्ग से मृत्युलोक में ढकेल दिया ॥

"तापस अंध स्राप सुधि आई। कौसिल्यहिं सब कथा सुनाई" पृष्ठ २१९

एक बार श्री दशरथ महाराज अहेर खेलने गए तहाँ रात्रि होने पर नदी के किनारे पर अहेर की खोज में बैठे थे यहां श्रवन महाराज अपने अंध माता पिता की कांवर राह में उतार कर आप उन के लिए पानी को गए ज्योंही तूंबा नदी में डुबाया तो उस में से शब्द भया उस शब्द को राजा दशरथ ने मृगशब्द जानके तीर मारा वह बाण श्रवन को लगा राजा व्याकुल होय अति क्लेश के साथ श्रवन के पास जाय बोले तब श्रवन को यह भान भया कि यह राजा धर्मात्मा है तब ऐसा कहा कि हे राजा मुझे अपने शरीर का मोह नहीं परंतु मेरे माता पिता अंधे तृषावंत हैं सो तू जल्दी जाय के उन्हें पानी पिला ऐसा कह शरीर त्याग कर दिया तब राजा जल ले तापसअंध के पास गये पानी दिया तब उन्हों ने पुत्र जान कुछ बात कही राजा मौन रहे तब तापसने कहा कि हे पुत्र तुम न बोलोगे तो हम पानी न पीएंगे तब राजा ने अति दीन होय अपना नाम कह सब कारण कहा तब उन्हों ने राजा को यह स्राप दिया कि जैसे पुत्र वियोग में मेरा शरीर छूटता है तैसे ही अंत समै में तुम्हें भी पुत्र वियोग का दुख प्राप्त होगा ॥

"तनय ययातहिं यौवन दयेऊ" पृष्ठ २२६ ॥

शुक्राचार्य्य की पुत्री देवयानी और वृषपर्वा की पुत्री शरमिष्ठा एक समै नहाने को गई तहां शरमिष्ठा ने भूल से देवयानी का वस्त्र पहिर लिया तब देवयानी ने कोप कर वहां शरमिष्ठा से वादा विवाद किया और शुक्राचार्य जी से आय के कहा तब शुक्राचार्य्य ने वृषपर्वा से उराहना दिया कि तेरी पुत्री ने देवयानी से वादा विवाद किया है तब वृषपर्वा ने विनती कर निवेदन किया कि जिसमें देवयानी प्रसन्न होंय सो किया चाहिये तब शुक्राचार्य्य बोले कि वह चाहती है कि

शरमिष्ठा मेरी दासी होय तब वृषपर्वा ने हजारदासी के समेत शरमिष्ठा को देवयानी की भृत्यापन में भेज दिया जब देवयानी ययाति राजा को ब्याही गई तहां शरमिष्ठा भी देवयानी के संग आई सो कहीं एक दिन राजा को शरमिष्ठा के संग क्रीड़ा करते देख देवयानी ने कोप कर पिता से जाय के कहा तब शुक्राचार्य्यजी ने ययाति राजा को स्राप दिया कि तैं बूढा हो राजा ने विनती किया कि देवयानी के संग मेरी तृप्ति नहीं भई फिर ऋषि ने दया करके कहा कि तुम अपने पुत्रों से युवा अवस्था मांग लो और अपनी बुढाई उन्हेंदे दो तब राजा ने देवयानी के पुत्र यदु आदि तीनों से मांगा परंतु उन्हों ने न दिया इससे उन्हें स्राप दिया तुम्हारा वंश राज्य का अधिकारी नहीं होगा ऐसेही शरमिष्ठा के दो पुत्रों से मांगा तिन में छोटे पुत्र पुरुने पिता की आज्ञा मान अपनी युवा अवस्था दे दिया और आशीर्वाद पाया इसी से राज्याधिकारी भए और तभी से पुरुवंशी कहाए ॥

"यह महिमा जानहिं दुर्वास।" पृष्ट २४४ ॥

राजा अंबरीष का ऐसा नेम था कि एकादशी का व्रत करके द्वादशी में ब्राह्मण जिवाय पारन करते थे एक समै दुर्वासा ऋषि न्योता मान स्नानकरने गए और द्वादशी थोड़ी रही सो वितीत काल जान के राजा ने आचमनी चरणाम्रत ले पारन किया तिस के उपरान्त दुर्वासा ऋषि आए राजा को चरणाम्रत लिए जान कोप कर स्राप दिया सो सुन राजा कंपायमान होय पृथ्वी में गिरा और सुदरशनचक्र दुर्वासा ऋषि को जलाने को चला तब उस के भय से ऋषि भागे अब आगे ऋषि औ पीछे चक्र घूमते २ सब देवतों की शरण में गए परंतु किसी ने शरण नहीं दिया तब विष्णु ने आरत वचन सुन के इन से कहा कि तुम राजाही की शरण में जाओ वही तुम्हारी रक्षा करैगा तब दुर्वासा ऋषि निराश होय अंबरीष के शरण में आएतब तक राजा उसी तरह व्याकुलता से पृथ्वी में पड़ा रहा राजा इन को आते देख आगे जाय इन को आदर पूर्वक ले आए और सुदरशनचक्र को निवारन किया तब विष्णु भगवान ने अंबरीष को निर्दोषी जान दुर्वासा के स्राप को आप अंगीकार किया और राजा ने दुर्वासा ऋषि को भोजन करवाय अत्यंत प्रीति से आदर पूर्वक बिदा किया ॥

"पापी गुरुतियगामी नहुष चढ़ेउ भूमिसुर यान।
लोक वेदतें विमुख भा अधम न बेनुसमान" पृष्ठ ॥ २४८

चंद्रमा के गुरू वृहस्पति तिन की स्त्री तारा उस ने काम के बस मोहित होय चंद्रमा से कहा कि मेरे संग भोग करो तब चंद्रमा गुरुस्त्री का विचार कुछ मन में न लाए और उसके साथ भोग किया जब वह गर्भवती भई और पुत्र भया जिस का बुध नाम है तब वृहस्पति महाराज बुधका नाम करन करने को बैठे उस समय चंद्रमा ने जाय के कहा कि महाराज यह पुत्र मेरा है मुझ को दीजिए ऐसा कह सब समाचार गुरु जी को सुनाया तब वृहस्पति बोले कि वीर्य्य तुम्हारा है परंतु

क्षेत्र हमारा है इससे पुत्र का अधिकारी मैं हूं इस में दोनों महात्मा प्रत्युत्तर करने लगे फिर देवतों ने इस की पंचायत कर बुध को चंद्रमा को दिला दिया ॥

राजा नहुष चंद्रवंशी और राजधानी प्रतिष्ठानपुर में बड़े धर्मात्मा प्रतापी राजा भए एक समैं जब इंद्र वृत्रासुर की हत्या के भय से भाग कर मानसरोवर कमल नाल में जाय छिपे तब इंद्रपद खाली देख वृहस्पति महाराज राज्य प्रबंध के निमित्त राजा नहुष को बुलाय इन्द्रपद दे के स्थापन किया तब राजा बड़े जस प्रताप के साथ इन्द्रपद का राज्य भोग करने लगे किसी समय इन को राज्यपद से यह नीच कांछा उत्पन्न भई कि मैं ने इन्द्रपद पाय के क्या किया जो इन्द्रानी के साथ भोग नहीं किया ऐसा विचार कर इन्द्रानी से यह संदेसा कहला भेजा तब इन्द्रानी अति व्याकुल भई पश्चात् यह प्रतिज्ञा ठहरी कि राजा ब्राह्मणों को कहार नाय यान पर बैठ के आवैं तो हम उनके संग भोग करैं यह बात सुन कामके बस हठ करके सप्तऋषियों से राजा ने कहा कि महाराज आप थोड़ा परिश्रम करें तो हमें इन्द्रानी प्राप्त होय ऐसा कह यान पर बैठा तहां पथ में ये ऋषि सत्यमार्गी धीरे २ नीचे देख पैर धरैं औ राजा काम के बस ऊपर से जलदी २ उच्चारण करे निदान राजा क्रोध में आय ऊपर से सर्प २ चिल्लाया तब तो सप्तऋषियों ने क्रोधित होय बिमान पटक कर श्राप दिया कि अरे राजा काम बस तेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई इस्से तू मृत्यलोक में जाके सर्प होय तब राजा मृत्यलोक में गिर सर्प भया ॥

राजा वेणु अपनी लड़काई से बड़ा क्रूर था और अनेक तरह के उपद्रव प्रति दिन किया करै इस से प्रजा को दुःख देखे वेणु के पिता अंग राजा को बड़ा क्लेश प्राप्त भया पश्चात् अंगराजा के मरने पर जब यह राज्य का अधिकारी भया तब तो इसने यह आज्ञा दी कि कोई शास्त्र पुराण वेद को न मानै उसके बदले में सब कोई मेरा गुण गान करैं और परमेश्वर मुझी को मानैं और जो कोई मेरी आज्ञा न मानैगा सो दंड के योग्य होगा इस बात के प्रचलित होने से सुर मुनि प्रजा अति दुखी भई पश्चात् एक समैं ऋषि लोगों ने आपस में विचार किया कि राजा के पास चलकर इस विषै में कुछ बात चीत करनी चाहिए ऐसा सोच के ऋषियों ने आय के राजा को बहुत ज्ञान उपदेश किया परंतु उसके चित्त में कुछ भी न आया यही उत्तर दिया कि तुम अज्ञानी हो तब ऋषियों ने क्रोध से स्त्रापा देके मारडाला पुनि ऋषियों ने राजगद्दी भ्रष्ट जान के उसके शरीर को मथा तब प्रथम जांघ में से एक काला मनुष्य निकला उसको पाप रूप ठहराया फिर भुजा में से पृथु निकले तब इन्हें धर्म का अवतार जान के राजगद्दी दिया सो राजा पृथु बड़े धर्मात्मा नामी राजा भए और काला मनुष्य जो प्रथम निकला था उसे कविण का राज्य दिया उसी की सन्तान निषाद कहलाई ॥

"सहसबाहु सुरनाथ त्रिशंकू।
केहि न राजमद दीन्ह कलंकू" पृष्ट २४८ ॥

सहस्रबाहु चत्री राजा महादेव के प्रसाद करके महाबली हुआ एक समैं सेना संग लेके अहेर खेलने गया वहां तृषावंत होय दूत को भेजा कि यहां कोई स्थान होय तो पानी मांग लावो दूत खोजता हुआ यमदग्नि के पास जाय उनसे कहा कि राजा प्यासे हैं तब ऋषि बोले कि राजा को बुला लावो यहां भोजन कर श्रम खोकर चले जांयगे तब दूत ने राजा से जाय के कहा राजा राजमद से बोला कि इतना भोजन ऋषि कहां पावेगा कि सेना समेत मेरी तृप्ति होगी इस बात को दूतद्वारा ऋषि सुन के बोले कि इसका सोच कुछ तुमारे राजा न करैं आज मेरे अतिथि होंय तब राजा सेना के साथ ऋषि के स्थान में गए और ऋषि महाराज ने काम धेनु के प्रसाद करके राजा की पहुनई करी तब सहस्रबाहुने ऋषि से पूछा इतना समान आप ने चण मात्र में कैसे कर लिया तब ऋषि ने निवेदन किया कि महाराज मेरे यहां कामधेनु है तब राजा ने कहा कि वह कामधेनु मुझ को दीजिए इस बात को सुन के ऋषिने बहुत उदास होय निवेदन किया परंतु राजाने नहीं माना और आज्ञा दिया कि कामधेनु को खोल ले चलो तब ऋषि ने विनती किया तब कामधेनु से म्लेच्छ पैदा भए उनसे और राजा से लड़ाई होने लगी फिर क्रोध में आकर सहस्रबाहु ने यमदग्नि का सिर काट डाला और रेणुका को भी घायल कर कामधेनु को ले के चला गया तब परशुराम कैलास पर समाचार सुन के आय पिता को मरा देख माता को संतोष के निमित्त पन किया कि पृथ्वी पर चत्री का बीज न रखैंगे ऐसा कह सहस्रबाहु को जाय मारा ॥

फिर लक्ष्मण बोले कि रामजी देखो राजा इन्द्र राजमद करके गौतम ऋषि की स्त्री अहिल्या से भोगकर उसके फलसे अपनेको कलंकी बनाया यह प्रसंग पहिले कहचुके हैं॥

राजा त्रिशंकु को राजमद करके यह कांचा भई कि हम ऐसा यज्ञ करैं कि सदेह स्वर्ग को जांय ऐसा विचार वशिष्ठ से जा कहा तब वशिष्ठ अभिमानी जान बोले कि ऐसी शास्त्र की मर्यादा नहीं फिर वशिष्ठ के पुत्र शक्ति से पूछा शक्ति ने गुरुवचन का अविश्वास देख के स्राप दिया कि तूं चांडाल है पिता पुत्र में द्वेष किया चाहता है तब त्रिशंकु चांडाली वृत्ति से वशिष्ठ की कामधेनु को मारा इस तीन पाप से तीन सींग माथे में जमे इसी से त्रिशंकु नाम पड़ा फिर यह राजा विश्वामित्र के शरण गया उन्होंने इससे यज्ञ प्रारंभ करवाया यह समाचार देख वशिष्ठादि सब ऋषि देवता मिलके यज्ञ विध्वंस करने लगे तब विश्वामित्र ने तपबल करके ऋषि औ देवता नये उत्पन्न कर यज्ञ को पूरा कर त्रिशंकु को आज्ञा दिया कि स्वर्ग को चलाजा जब त्रिशंकु स्वर्ग में गया तब वहां से देवतों ने नीचे ढकेला इस खैंचा खैंची में वह उलटा होय अधर में लटक रह गया सो त्रिशंकु तारा विदित है और उसी के मुंह से जो लार टपकी सो कर्मनाशा नदी भई जो बनारस बिहार के जिले के बीच बहती है और शास्त्र में उसका पानी छूना वर्जित है ॥ २४८

"दंडकबन पुनीत प्रभु करहू। उग्र स्राप मुनिवर कै हरहू" २४९ ॥

एक समै पंचवटी में दुर्भिक्ष पड़ा तब सब मुनि आहारार्थ गौतमऋषि के पास गये तब गौतम ने तपबल करके बहुत काल तक ऋषियों का पालन किया पश्चात् ऋषियों ने आपस में विचार किया कि अब जनस्थान को चलना चाहिए परंतु गौतम के भय से जा न सके तब सभों ने छल करके मायाकृत एक गऊ बनाया गौतमऋषि के हाथ में दे उसकी प्रशंसा करने लगे इस में वह हाथ में छूट मर गई तब ऋषियों ने गौतम को गोहत्या दोष लगाय दंडकारण्य को चले गए और गौतमऋषि ने जब जाना कि ऋषियों ने छल किया तब यह स्राप दिया कि जिस बन के लोभ से तुम ने मुझ से छल किया वह भ्रष्ट हो जाय और राक्षस वास करें ॥

दूसरी कथा कि राजा दंड ने अपने गुरु पुत्री के अप्रसन्नता में भोग किया तब उसने अपने पिता भृगुमुनि से जाय कहा तब मुनि ने स्राप दिया कि इस राजा का सब देश भ्रष्ट हो जाय और वहां धूरि बरसे तब ऋषि लोग वहां से भाग कर जहां बसे वह जगह का नाम जनस्थान पड़ा ॥

"सेवरी देखि राम गृह आए ।
मुनि के वचन समुझि जियभाए" पृष्ट ३१०॥

सेवरी के गुरु परंधाम को जब जाने लगे तब सेवरी ने निवेदन किया कि मैं भी शरीर छोड़ परंधाम को जाऊंगी तब मुनिने कहा कि तू इस कुटी में रह तेरे यहां कुछ दिनमें राम लक्ष्मण आवेंगे तब तू उनका दर्शन करके शरीर त्याग करियो इसवचन को सुन विश्वास पूर्वक तब से प्रतिदिन उसका यह नेम था कि सबेरे कुटी लीपके बन में जाय दो दोना भर फल ले आय कुटीमें रखके बाहर बैठसांझ तक राह देखा करै जब रात होय तब निरास होय वही फल खाके सो रहै इसी तरह प्रतिदिनकरते २ दस हजार वर्ष बाद राम जी पधारे तब दर्शन करके शरीर त्याग परंधाम को गई ॥

"इहांस्रापबस आवत नाहीं ।
तदपि सभीत रहौं मनमाहीं" पृष्ट ३२१ ॥

प्रवर्षन पहाड़ पर मतंगऋषि तपस्या करते थे कि बाली ने दुंदुभी दैत्य को आकाश मे युद्ध करते २ पटका सो मतंगऋषी के पास गिर के मर गया और उस के रुधिर का छींटा ऋषी के ऊपर पड़ा तब ऋषी ने क्रोध कर बाली को शाप दिया आज से फिर यहाँ आवैगा तो भस्म होजायगा ॥

"तेहि सब आपनि कथा सुनाई । मैं अब जाब जहां रघुराई" पृष्ट३३०

देव अंगना नाम करके एक स्त्री ने बदरीवन में तप करके ब्रह्मा से वर मांगा कि हमें रघुनाथ जी का दर्शन होय तब ब्रह्मा ने उसे इस बिबर में रहनेको कहा कि यहां रह तुम्हें बानर द्वारा श्री रामावतार की कथा सुन के राम जी का दर्शन होगा तब से वह स्त्री यहां रहती थी बानरों से समाचार सुन प्रवर्षनगिरि पर जाय श्री राम जी का दर्शन कर फिर बदरीबन निज स्थान को गई ॥

"नाथ नील नलकपि दोउ भाई।
लरिकाई ऋषि आशिष पाई" पृष्ट ३६०

नील नल अपनी बाल अवस्था में जब समुद्र के किनारे मुनि लोग सालिगराम की पूजा कर आंख मूद ध्यान अवस्था में प्राप्त होंय तब ये सालिगराम को उठा के पानी में फेंक दें ऐसा देख के मुनि लोगोंने व्याकुल होय यह स्राप दिया कि इस बानर का छुआ पत्थर पानी में डूबे नहीं सो स्राप आशीर्वाद के तुल्य भया॥

"होइहिं कीन्ह कबहुं अभिमाना।
सो खोवै चह कृपानिधाना" ॥ पृष्ट ४६५॥

एक समय कागभुसुण्डि दशरथ के आंगन में बाल लीला देख रहे थे कि देखते २ इनको मोह हुआ तब राम जीके हाथ से पूरी छीन के भागे राम जीने मोह से इनकी ढिठाई देख गरुड़ का स्मरण किया सो गरुड़ औ भुसुण्डि दोनों में अत्यन्त युद्ध भया निदान कागभुसुण्डि घायल होय भाग के तीनों लोक में फिरे कहीं गरुड़ ने पीछा नहीं छोड़ा तब फिर राम जी की शरण में आए तब राम जीने गरुड़ को निवारन कर कागभुसुंडि को ज्ञान उपदेश दिया वही अभिमान गरुड़ को रहा कृपानिधान ने श्रोता बनाय अभिमान खंडन किया॥

।गूढ़ार्थ।

अवस्था——जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय,। इनके विभु ये हैं, जाग्रत के विश्व। स्वप्न के तैजस। सुषुप्ति के प्राज्ञ। तुरीय के ब्रह्म।

अविद्या——जीवों की अल्पज्ञता।

अंग———वेद के अंग छः हैं।१ शिक्षा २ कल्प ३ व्याकरण ४ निरुक्ति ५ छंद ६। ज्योतिष् वेद पढ़ने की विधि को शिक्षा कहते हैं। कल्प उसे कहते हैं जिसमें सब कर्मों के करने की रीति लिखी है। व्याकरण उसे कहते हैं जिससे शब्दों की शुद्धता का ज्ञान हो। जिसमें वेद के कठिन शब्दों का अर्थ लिखा है उसे निरुक्ति कहते हैं। जिससे अक्षर मात्रा वृत्त का ज्ञान हो उसे छंद कहते हैं।

आश्रम——चार प्रकार के आश्रम हैं १ ब्रह्मचर्य २ गृहचर्य ३ वाणप्रस्थ ४ संन्यास।

आकार——आकार चार हैं १ पिंडज अर्थात् जो देह के साथ उत्पन्न होते हैं जैसे मनुष्य पशु आदि २ अंडज जो अंडे से होते हैं जैसे पक्षी सांप आदि ३ स्वेदज, जो पानी से उत्पन्न होते हैं जैसे चीलर ढील आदि ४ उद्भिज्ज जो पृथ्वी को फोड़ के होते हैं जैसे वृक्ष आदि॥

आभरण——बारह हैं, नूपुर। किंकिनी। हार। चूरी। मुंदरी। कंकण। बाजूबन्द। कंठश्री। बेसर। बिरिया। टीका। शिरफूल॥

उपवेद——सामवेद का उपवेद गांधर्ववेद अर्थात् संगीतशास्त्र। ऋग्वेद का उपवेद

आयुर्वेद अर्थात् वैद्यक। यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद । अथर्ववेद का उपवेद वास्तु अर्थात् शिल्पविद्या।

ऋतु——ऋतु छः हैं १ बसंत, चैत बैसाख २ ग्रीष्म, जेठ असाढ़ । ३पावस, सावन भादों ४ शरद, कुआर कातिक ५ हेमंत, अगहन पूस६ शिशिर, माघ फागुन॥

कल्प——चारोंयुग को चौकड़ी कहते हैं और हजार चौकड़ी का एक कल्प होता है।

गुण——तीन गुण हैं अर्थात् सत, रज, तम, । और राजा के चार गुण हैं अर्थात् साम, दान, दंड विभेद ।

चतुरंगिनीसेना—जिस सेना के चार अंग हैं अर्थात्, हाथी घोड़ा, रथ, पैदल ।

तत्व——पांच तत्त्व हैं अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश ।

त्रिताप——तीन प्रकार का दुःख अर्थात् आध्यात्मिक, अधिभौतिक, आधिदैविक ।

त्रिदेव——अर्थात् ब्रह्मा विष्णु महेश ।

त्रिविध कर्म——संचित, प्रारब्ध, क्रियमाण ।

दिक्‌पाल——अर्थात् दिशाओं के रक्षक, पूर्वदिशा के इन्द्र । आग्नेय के अग्नि, दक्षिण के यम । नैऋत के निऋत । पश्चिम के वरुण । वायव्य के वायु । उत्तर के कुवेर । ईशान के ईशान ।

पुराण——पुराण उसे कहते हैं जिस में इन पांचों का वर्णन हो अर्थात् सर्ग, प्रतिसर्ग, मन्वन्तर, वंश चरित ।

भक्त——चार प्रकार के भक्त हैं अर्थात् आर्त्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी, विज्ञाननिवास ।

भक्ति——नव प्रकार की भक्ति हैअर्थात् श्रवण,कीर्त्तन,स्मरण,चरणसेवा,अर्चन,वन्दन, दासता, सख्य ।

युग——चार युग हैं अर्थात्, सत्ययुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग ।

योनि——चौरासी लाख योनि हैं, नव लाख जलचर, सत्ताईस लाख स्थावर, ग्यारह लाख कृमि, दस लाख पक्षी, चौपाये तेईस लाख. मनुष्य चार लाख ।

राम——राम तीन हैं अर्थात् परशुराम, बलराम, श्री रामचन्द्र ।

विद्या——ईश्वर की सर्वज्ञता को विद्या कहते हैं ।

शास्त्र——छः शास्त्र हैं अर्थात् वेदांत, सांख्य, योग, मीमांसा, न्याय, वैशेषिक ,

शृंगार——सोलह प्रकार का सिंगार है, अंगशुचि, मज्जन, अमलवसन, पहिरन, जावक, केश संवारना, मांग में सेंदुर लगाना, भाल में खौरी अर्थात् तिलक, चिबुक पर तिल बनाना, मेंहदी लगाना, अरगजा अंग में लगाना, भूषण पुष्प, सुगंधलगाना मुखराग, दांत रंगना, अधरराग, काजरलगाना ।

सप्तऋषि—सात ऋषि अर्थात् कश्यप, अत्रि,वशिष्ठ,विश्वामित्र,भरद्वाज,गौतम, यमदग्नि ।

समीर——तीन प्रकार की वायु अर्थात्, शीतल, मंद, सुगंध ।

सिद्धि—आठ सिद्धि हैं अर्थात् अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्रकाम्य, ईशित्व, वशित्व ।